वर्ष47/अंक05/सितंबर2021/मासिक

दिल्ली शिक्षा

नए युग में

THE STATE TEACHERS AWARD 2021

'आभार शिक्षकों का'

सम्मानित शिक्षक

प्रधान संपादक

मनोज कुमार द्विवेदी
निदेशक, डी.आई.पी.

संपादक

आलोक रंजन
डा. बी.पी. पांडे, OSD, स्कूल ब्रांच

समन्वय

आदी रुंगटा
कादंबरी लोहिया, प्रवक्ता (इंगलिश)
प्रवीण मिश्रा
राजेश दुबे

विशेष आभार

मनीष सिसोदिया
शिक्षा मंत्री, दिल्ली

एच.राजेश प्रसाद, आईएएस
प्रधान सचिव, शिक्षा विभाग

पद्मिनी सिंगला, आईएएस
सचिव, सूचना एवं प्रचार निदेशालय

उदित प्रकाश राय, आईएएस
निदेशक, शिक्षा निदेशालय

शैलेन्द्र शर्मा, शिक्षा सलाहकार
विक्रम भट्ट, सलाहकार

लेआउट डिज़ाइन

हरिओम वशिष्ठ

ग्राफ़िक्स एंड फोटो

पारुल शर्मा
अभिषेक हरित
महक वर्मा

संपादकीय मंडल

अक्षय कुमार दीक्षित, टीजीटी (हिंदी)
अदिति भसीन, टीजीटी (इंगलिश)
आलोक मिश्रा, असिस्टेंट प्रोफेसर (SCERT)
दीप्ति चावला, टीजीटी (इंगलिश)
देवेंद्र कुमार, प्रवक्ता (गणित)
नीरू लोहिया, टीजीटी (इंगलिश)
डा. नील कमल मिश्र, टीजीटी (विज्ञान)
भावना सावनानी, प्रवक्ता (विज्ञान)
मनु गुलाटी, टीजीटी (इंगलिश)
मीनू गुप्ता, टीजीटी (इंगलिश)
मुरारी झा, टीजीटी (सामाजिक विज्ञान)
रुचि वली, टीजीटी (हिंदी)
रोहित उपाध्याय, टीजीटी (गणित)
वंदना गौतम, प्रवक्ता (इतिहास)
विकास रंजन, टीजीटी (सामाजिक विज्ञान)
शीतल, टीजीटी (हिंदी)
संजय प्रकाश शर्मा, प्रवक्ता (भूगोल)
सुमन रेलन, प्रवक्ता (इंगलिश)
हरिशंकर, टीजीटी (हिंदी)
हरीश यादव, टीजीटी (इंगलिश)
मोहम्मद एहसान
अंकित सोलंकी
सुमित कुमार
श्रीया
महेंद्र कुमार
प्राची राठी

अंदर के पन्नों पर...

1 ...... आपके साथी - देश के मेंटर

4 ...... पाठ्यपुस्तकों में देशभक्त

10 ...... बनाएँगे अपनी राह खुद

14 ...... 2,36,522 मिशन एडमिशन

17 ...... काउंसलिंग सेशन्स ने बदली सोच

20 ...... प्रकृति की गोद में क्लास

24 ...... सखी लाइब्रेरी

27 ...... बड़े बदलाव की झलक

30 ...... कहानी कामयाबी की

32 ...... नृत्य के ज़रिये गणित

34 ...... शिक्षा संस्कृति में कलात्मकता की दरकार

37 ...... आसान नहीं, ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियाँ

40 ...... State Teachers Award-2021

43 ...... मेरी उड़ान

45 ...... दिल्ली के शिक्षा जगत में मेरी यात्रा

आपके साथी – देश के मेंटर

सबसे बड़ा मेंटरिंग प्रोग्राम

कल्पना कीजिए कि एक छात्रा जिसने अभी–अभी अच्छे मार्क्स के साथ 12वीं की परीक्षा पास की है और इस उलझन में है कि आगे की पढ़ाई के लिए कौन–सा कोर्स चुना जाए और आगे की योजना कैसे बनाई जाए।

वह डिजाइन और आर्ट के क्षेत्र में रुचि रखती है और उसी क्षेत्र में एक अच्छी डिज़ाइनर या एक अच्छी आर्टिस्ट बनाना चाहती है लेकिन उसके पास ऐसा कोई नहीं है जिससे वह उच्च शिक्षा के अपने पसंदीदा कोर्स के बारे में बात कर सके, चर्चा कर सके और अपनी शंकाओं को दूर कर सके। 2019 में इंडिया टुडे के एक सर्वे के अनुसार देश में 14 से 21 साल की उम्र के 93 फीसदी छात्र सिर्फ सात करियर विकल्पों के बारे में जानते हैं।

क्या आपको भी ये स्थिति जानी–पहचानी सी लगती है?

क्या आपके मन में भी कभी दुविधा की स्थिति उत्पन्न हुई थी? जब आप किसी सवाल के जवाब को खोजने की कोशिश कर रहे थे, उस सवाल को लेकर अपने मन में स्पष्टता लाने का प्रयास कर रहे थे लेकिन तब आपकी मदद के लिए कोई भी नहीं था।

यह स्थिति बहुत ही सामान्य है और हम सभी इससे गुज़रे हैं। हम सभी इसे किसी न किसी तरीके से खुद से रिलेट कर सकते हैं। दिल्ली के सरकारी स्कूलों में 9–12वीं क्लास में पढ़ने वाले ज़्यादातर विद्यार्थी ऐसे हैं जो फर्स्ट जनरेशन लर्नर हैं और उन्हें इसी तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उन्हें एक ऐसे साथी की ज़रूरत है जिसमें उनके साथ मिलकर करियर एक्सप्लोर करने में उनकी मदद कर सकें।

इसके लिए दिल्ली सरकार ने भारत के सबसे बड़े मेंटरिंग प्रोग्राम 'देश के मेंटर' की शुरुआत की है। 'देश के मेंटर' एक ऐसा कार्यक्रम है जो दिल्ली के सरकारी स्कूल के विद्यार्थी जो 9वीं से 12वीं कक्षा में पढ़ते हैं उनके करियर को खोजने की यात्रा में मार्गदर्शक बनेगा, उनकी हैण्ड होल्डिंग कर उन्हें करियर संबंधी ज़रूरी जानकारी देगा और एक ऐसा मंच प्रदान करेगा जहाँ वे अपने विचारों को साझा कर सकें।

स्कूलों में पढ़ने वाले हर बच्चे के कुछ न कुछ सपने होते हैं और उनके पास अपने सपनों को हासिल करने की क्षमता भी होती है। उन्हें अपने सपनों को पूरा करने के लिए बस थोड़ी गाइडेंस और मोटिवेशन की ज़रूरत होती है। उन्हें किसी ऐसे साथी की ज़रूरत है जो उन पर विश्वास करे और उन्हें आगे बढ़ने के लिए दिशा दिखाए। 'देश के मेंटर' प्रोग्राम बच्चों की इसी आवश्यकता को पूरा करने का काम करेगा। इस प्रोग्राम से बच्चों को गाइडेंस, करियर एक्सप्लोरेशन और उच्च शिक्षा व करियर संबंधी जानकरियाँ मिलेंगी जिससे बच्चे अपने सपनों की उड़ान भर सकेंगे।

भारत दुनिया का सबसे युवा देश है। यदि हमारी युवा पीढ़ी शिक्षा को बेहतर करने की दिशा में एक साथ आगे बढ़ेगी और शिक्षा को जनांदोलन बनाने का काम करेगी तो भारत को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक पाएगा। ये निश्चित रूप से भविष्य के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, व्यवसायियों, प्रशासनिक अधिकारियों, आर्टिस्ट्स, शिक्षकों आदि को तैयार करने में बहुत बड़ी भूमिका निभाएगा जो विश्व पटल पर भारत को गौरवान्वित करेंगे। इस दिशा में देश के मेंटर प्रोग्राम एक अहम भूमिका निभाएगा और अपने क्षेत्र के प्रोफेशनल युवाओं को साथ लाने का काम करेगा। ये युवा भारत की अगली पीढ़ी को आगे बढ़ने के लिए सपोर्ट व गाइडेंस देंगे।

'देश के मेंटर' एक ऐसा कार्यक्रम है जो दिल्ली के सरकारी स्कूल के विद्यार्थी जो 9वीं से 12वीं कक्षा में पढ़ते है उनके करियर को खोजने की यात्रा में मार्गदर्शन देगा, उनकी हैण्ड होल्डिंग कर उन्हें करियर संबंधी ज़रूरी जानकारी देगा और एक ऐसा मंच प्रदान करेगा जहाँ वे अपने विचारों को साझा कर सकें।

इस कार्यक्रम के तहत दिल्ली सरकार के स्कूलों में पढ़ने वाले 10 लाख विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा व करियर संबंधी सलाह देने व मार्गदर्शन के लिए 3 लाख मेंटर्स से जोड़ा जाएगा। यह कार्यक्रम 9–12 वीं कक्षा के स्कूली विद्यार्थियों के लिए है। वह युवा जो 18–35 वर्ष की उम्र के बीच के हैं और विद्यार्थियों को गाइडेंस देकर उन्हें करियर के विभिन्न रास्तों का एक्सप्लोरेशन करवा कर शिक्षा में बदलाव लाने का जुनून रखते हैं, मेंटर

के रूप में इस कार्यक्रम से जुड़ सकते हैं।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य मेंटर और मेंटी के बीच सकारात्मक विचारों के आदान–प्रदान के लिए एक माहौल तैयार करना है ताकि एक भी बच्चा ऐसा न रहे जिसमें टैलेंट तो था लेकिन वह गाइडेंस की कमी से अपने सपने पूरे नहीं कर पाया। इस कार्यक्रम में एक मेंटर और मेंटी 2 महीने की अवधि तक बातचीत करेंगे और अगर मेंटर और मेंटी के बीच अच्छा समन्वय स्थापित हो जाता है तो इसे अगले 4 महीने हेतु और बढ़ाया जाएगा। यह बातचीत 'देश के मेंटर' नामक एक मोबाइल ऐप की मदद से की जाएगी जहाँ बातचीत को सुचारू बनाने के लिए मेंटर्स और मेंटी को उनके करियर की रुचि के आधार पर जोड़ा जाएगा। ये बातचीत एक–दूसरे को समझने, उनकी रुचियों, शौक और विभिन्न करियर व उच्च शिक्षा के क्षेत्रों के बारे में जानकारियाँ देने और उससे संबंधित तैयारियाँ करने आदि पर आधारित होगी।

इस कार्यक्रम से न केवल विद्यार्थियों को अपने करियर को समझने में मदद मिलेगी बल्कि मेंटरों को भी एक ऐसा मंच मिलेगा जहाँ से वे शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को निभाएँगे और देश के उज्ज्वल भविष्य को तैयार करने में भागीदार बनेंगे।

अलिशा बुटाला
यति चतुर्वेदी
राधेरमण सिंह

वेबसाइट : www.deshkementor.com

इंस्टाग्राम : deshkementor

फेसबुक : Desh-Ke-Mentor

ट्विटर : Desh Ke Mentor (@DeshKeMentor) / Twitter

पाठ्यपुस्तकों में देशभक्त

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

हममें से शायद ही कोई होगा जिसने अपने जीवन में यह कविता पढ़ी या पढ़ाई न हो। आज भी कक्षा 6 की हिंदी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' में यह अमर कविता शामिल है। आपको क्या लगता है? पुस्तक में इस कविता को शामिल करने का क्या उद्देश्य रहा होगा?

आप सही सोच रहे हैं। भाषा कौशलों के विकास के साथ–साथ इस कविता को इसलिए भी पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किया

गया है ताकि हमारे विद्यार्थियों को हमारे देश के महान स्वतंत्रता सेनानियों और अमर शहीदों के जीवन से परिचित करवाया जा सके। हम जान सकें कि हमारे लिए उन्होंने क्या बलिदान दिए थे। हम उनके जीवन से प्रेरणा ले सकें और अपने दिलों में अपने देश के लिए योगदान देने का जज्बा जगा सकें। जो समाज अपने शहीदों और स्वतन्त्रता सेनानियों को याद रखता है, उनके त्याग और बलिदानों से प्रेरणा लेता है, उनके विचारों और आदर्शों पर चलता है, उसका आधार मजबूत रहता है और भविष्य उज्ज्वल रहता है।

इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए केवल झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ही नहीं बल्कि अनेक स्वतंत्रता सेनानियों का उल्लेख हमारी पाठ्यपुस्तकों में अनेक तरीकों से किया गया है।

पाठ्यपुस्तक 'इब्तदाई उर्दू' (कक्षा 4) में 'सरदार भगत सिंह' पाठ में अमर शहीद भगत सिंह के जीवन और उनके कार्यों का परिचय दिया गया है। इसी पाठ के अभ्यासों में आज़ादी के अनेक सेनानियों के नाम और चित्रों से बच्चों का परिचय करवाया गया है।

'इब्तदाई उर्दू' (कक्षा 5) में 'मौलाना बरकतुल्ला हाली' सम्मिलित हैं। इस पाठ में मौलाना बरकतुल्ला के जीवन और आज़ादी की लड़ाई में उनके योगदान का परिचय दिया गया है।

अंग्रेजी की पुस्तक 'Honeydew' (कक्षा 8) के पाठ 'Glimpses of The Past' में आज़ादी की लड़ाई को एक चित्रकथा के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

हिंदी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' (कक्षा 7) में सम्मिलित कविता 'झाँसी की रानी' में ही कुछ अन्य देशभक्त शहीदों के बारे में भी ज़िक्र है जैसे – नाना साहब, तात्या टोपे, वीर कुँवर सिंह आदि। हिंदी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' (कक्षा 7) में तो आज़ादी की पहली लड़ाई के अमर नायक 'वीर कुँवर सिंह' के बारे में एक पूरा पाठ ही शामिल है। इसी पाठ में कुछ अन्य सेनानियों के भी नाम आए हैं जैसे – मंगल पांडे, बेगम हजरत महल आदि।

इन पाठ्यपुस्तकों में जिन शहीदों का जिक्र किया गया है, उनमें से कुछ नाम तो ऐसे हैं जिनसे आज भी लगभग सभी भारतवासी बखूबी परिचित हैं, साथ ही कुछ नाम ऐसे भी हैं जिनके बारे में पहले शायद ही कोई जानता होगा। ऐसा ही एक नाम है देवी मैना का। यह पाठ है –'नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया' जो हिंदी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' (कक्षा 9) में है। देवी मैना एक छोटी–सी बच्ची थी जिसे अंग्रेज़ों ने नाना साहब से बदला लेने के लिए मार डाला था।

अनजाने हों या जाने–पहचाने, पाठ्यपुस्तकों में अनेक महान देशभक्तों का ज़िक्र एक बार तो अवश्य किया गया है। लेकिन एक नाम ऐसा है जो बार–बार बच्चों के सामने आता है। वह नाम है महात्मा गांधी। कक्षा 3 से कक्षा 12 तक गांधी जी कभी प्रत्यक्ष रूप से तो कभी अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों के साथ बने रहते हैं। इसकी एक झलक आपको अगले पन्नों पर दिखाई देगी।

अब एक बार फिर उसी सवाल की ओर लौटते हैं जिससे हमने अपनी चर्चा की शुरुआत की थी। पाठ्यपुस्तकों में इन शहीदों के बारे में इतना कुछ क्यों बताया गया है? जैसा कि पहले भी कहा गया है, गांधी जी और अन्य शहीदों का उल्लेख इस स्तर पर किए जाने के पीछे सोच शायद यही रही होगी कि हमारे बच्चे उनके बारे में

पाठ्यपुस्तकों में गांधी

गांधी जी से बच्चों का परिचय कक्षा 3 से ही शुरू हो जाता है जो कक्षा 12 तक जारी रहता है। 'रिमझिम' (कक्षा 3) के पाठ 'मीरा बहन और बाघ' में बच्चों को गांधी जी का चित्र और उनका ज़िक्र मिलता है। 'रिमझिम' (कक्षा 4) का पाठ 'स्वतंत्रता की ओर' गांधी जी के आश्रम में रहने वाले एक छोटे से बच्चे धनी के बारे में है जो गांधी जी के साथ दांडी यात्रा पर जाने की ज़िद करता है लेकिन गांधी जी के समझाने पर उनके लौटने तक उनकी बकरी की देखरेख करने के लिए मान जाता है। इस पाठ के साथ गांधी जी के जीवन से जुड़े चित्रों का एल्बम, फोटोग्राफ, डाक–टिकट आदि दिए गए हैं। प्रश्न–अभ्यासों द्वारा भी बच्चों को गांधी जी से परिचित करवाने की कोशिश की गई है।

>>>>>

जानें और उनसे प्रेरणा लें। लेकिन यहाँ सवाल यह उठता है कि क्या हम इस उद्देश्य को हासिल कर पा रहे हैं।

किसी के जीवन से प्रेरणा लेना और उनके बताए रास्ते पर चलना या इसके लिए किसी को प्रेरित करना कोई इतना आसान और सीधा–सीधा कार्य नहीं है। यह उद्देश्य किसी के बारे में केवल पढ़कर या पढ़ाकर प्राप्त नहीं किया जा सकता। पाठ्यपुस्तक की सामग्री तो इसकी शुरुआत भर हो सकती है।

यदि हम बच्चों में देशभक्ति की भावना का संचार करना चाहते हैं तो इसके लिए पाठ्यपुस्तक के पाठों को केवल 'पढ़ा' देने भर से काम नहीं चलेगा। इसके लिए बच्चों को उन पाठों पर सोच–विचार करने के लिए प्रेरित करना होगा। उन पाठों की बातों को आज के समाज और बच्चों के जीवन से जोड़ना होगा। हमें बच्चों को 'तथ्यों' को मान लेने और याद कर लेने के बजाय सवाल करने और तर्क करने के अवसर देने होंगे। इस काम के लिए पाठ्यपुस्तकों में दिए गए प्रश्न और गतिविधियाँ सबसे बड़ा औजार साबित हो सकती हैं। लेकिन क्या पाठ्यपुस्तकों में ऐसी कोई गुंजाइश है कि वे बच्चों में तर्क, चिंतन और स्वयं निष्कर्ष निकालने जैसी योग्यताओं का विकास कर सकें? अधिकतर पाठयसामग्री के लिए इसका सच्चा उत्तर है – नहीं। इसे समझने के लिए आइए कुछ उदाहरण देखते हैं।

हिंदी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' (कक्षा 9) में महादेवी वर्मा के संस्मरण 'मेरे बचपन के दिन' में गांधी जी से जुड़ा एक प्रसंग है। महादेवी जी जब पढ़ती थी, उन्हें एक बार कविता के पुरस्कार के रूप में चाँदी का एक कटोरा मिला। जब उन्हें गांधी जी से मिलने का मौका मिला उन्होंने बाल–स्वभाववश वह कटोरा उन्हें दिखाया और बताया कि यह उनकी कविता का पुरस्कार है। गांधी जी ने कटोरा हाथ में लेकर कहा – तू देती है इसे?

दांडी यात्रा का सचित्र उल्लेख पाठ्यपुस्तक 'आसपास' (कक्षा 5) में भी किया गया है। रिमझिम (कक्षा 5) के पाठ 'चिट्ठी का सफर' में गांधी जी के पत्रों से जुड़ी रोचक बातें बताई गई हैं। वसंत (कक्षा 8) के पाठ 'चिट्ठियों की अनूठी दुनिया' में गांधी जी को मिलने वाली चिट्ठियों और उनके उत्तर लिखने में उनकी प्रतिबद्धता को विस्तार से बताया गया है। वसंत (कक्षा 7) के पाठ 'आश्रम का अनुमानित व्यय' में बताया गया है कि साबरमती आश्रम की स्थापना से पहले गांधी जी ने उसके खर्चों के बारे में क्या हिसाब लगाया था। यह पाठ कुछ तथ्यों और सूचियों का संकलन भर है। पुस्तक 'भारत की खोज' (कक्षा 8) में प्राचीन भारत से लेकर अंग्रेज़ी राज तक के भारत की कहानी दी गई है। इसके अंतिम तीन अध्याय आज़ादी की लड़ाई में गांधी जी के योगदान का वर्णन विस्तार से करते हैं। गांधी जी के चित्रों के बावजूद यह भी केवल तथ्यों का संकलन भर है।

महादेवी जी लिखती हैं – "अब मैं क्या कहती? मैंने दे दिया और लौट आई। दुख यह हुआ कि कटोरा लेकर कहते, कविता क्या है? पर कविता सुनाने को उन्होंने नहीं कहा।"

इस प्रसंग में हमारे सामने गांधी जी को मानव के रूप में प्रस्तुत करने का एक अवसर था। यहाँ हम बात कर सकते थे कि गांधी जी के सामने कौन–से कारण थे कि उन्होंने एक बच्ची से भी उसका पुरस्कार लेने से संकोच नहीं किया। यदि वे उसकी कविता सुन लेते और उसकी प्रशंसा कर देते तो क्या फर्क पड़ता? हम गांधी जी की महिमा का बखान करने के बजाय उन्हें बच्चों के जीवन से जोड़ सकते थे ताकि बच्चे उनके व्यक्तित्व की अच्छाइयों को स्वयं पहचानकर उनमें से अपने लिए उपयुक्त विशेषताओं को स्वयं चुन पाते। लेकिन यह अवसर व्यर्थ चला गया क्योंकि पुस्तक निर्माताओं की प्राथमिकताएँ अलग होती हैं।

ऐसा ही एक उदाहरण हम कक्षा 3 में भी देख सकते हैं। 'रिमझिम' (कक्षा 3) में पाठ 'मीरा बहन और बाघ' में गांधी जी की सहयोगी मीरा बहन के जीवन की एक छोटी–सी घटना सोचने के लिए विवश करती है कि सत्याग्रह के सिद्धांतों को जीवन में उतारा जा सकता है या नहीं और उसके क्या परिणाम हो सकते हैं। होता यह है कि कुछ गाँव वाले एक खतरनाक आदमखोर बाघ को पकड़ने के लिए एक बकरी को चारा बनाकर पिंजरा लगा देते हैं। सुबह होती है तो पिंजरा खुला मिलता है। मीरा बहन बताती हैं कि उन्होंने ही बकरी को खोल दिया था। उन्होंने कहा, "मुझे लगा कि हम बाघ को धोखा देकर क्यों फँसाएँ!"

सत्याग्रह की दृष्टि से मीरा बहन का यह कार्य बिलकुल उचित लगता है। हमारे प्रत्येक कार्य में 'सत्य' या 'सही' की कसौटी होनी चाहिए। लेकिन हम इस घटना के माध्यम से बच्चों को

सोचने के लिए प्रेरित कर सकते थे कि क्या गाँव वालों के पास उस आदमखोर बाघ को पकड़ने का कोई अन्य तरीका था? क्या पिंजरे को खोलकर मीरा बहन ने गाँव वालों के जीवन को खतरे में नहीं डाला क्योंकि आदमखोर बाघ वहाँ अभी भी खुला घूम रहा था? इस तरीके से हम बच्चों को समस्याओं के समाधान स्वयं खोजने के अवसर और प्रेरणा दे सकते थे।

इसी प्रकार का एक पाठ है हिंदी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' (कक्षा 10) में, जिसका नाम है 'एक कहानी यह भी'। यह पाठ, लेखिका मन्नू भण्डारी की आत्मकथा का एक अंश है। इस अंश में आज़ादी की लड़ाई में लेखिका के योगदान का ज़िक्र तो किया गया है लेकिन यहाँ भी अभ्यासों में इस पर विचार विमर्श करने के अवसर की उपेक्षा कर दी गई है।

अब इस तस्वीर का दूसरा पहलू देखते हैं। ऐसा नहीं है कि किसी भी पाठ में बच्चों में चिंतन, सोच–विचार करने और उनमें देशभक्ति के मूल्यों का विकास करने की कोशिश नहीं की गई है। कहीं–कहीं ऐसा करने का प्रयास दिखाई भी देता है। उदाहरण के लिए वसंत (कक्षा 6) में गांधी जी के बारे में एक पाठ है – 'नौकर'। इस पाठ में गांधी जी के उन कार्यों को बताया गया है जिन्हें आम–तौर पर लोग नौकरों से करवाते हैं। हालाँकि यह पाठ गांधी जी की प्रशंसा की भावना से लिखा गया है लेकिन इसके प्रश्न–अभ्यासों में कोशिश की गई है कि बच्चे उनके गुणों और विशेषताओं को पहचानें और उनकी व्यावहारिकता की जाँच स्वयं करें। उदाहरण के लिए –

> 'नौकरों को हमें वेतनभोगी मजदूर नहीं, अपने भाई के समान मानना चाहिए। इसमें कुछ कठिनाई हो सकती है, फिर भी हमारी कोशिश सर्वथा निष्फल नहीं जाएगी।' गांधी जी ऐसा क्यों कहते होंगे? तर्क के साथ समझाओ।
>
> गांधी जी को ढेरों काम करने के बाद लिखने का समय कब मिलता होगा? अपनी कल्पना से लिखो।
>
> गांधी जी अपने साथियों की ज़रूरत के मुताबिक हर काम कर देते थे लेकिन उनका खुद का काम कोई और करे, ये उन्हें पसंद नहीं था। क्यों?

'क्षितिज' (कक्षा 9) के पाठ 'नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया' में भी प्रश्न– अभ्यासों द्वारा बच्ची मैना के व्यक्तित्व के गुणों पर बच्चों का ध्यान आकर्षित करवाने की कोशिश की गई है। वहाँ पूछा गया है – "बालिका मैना के चरित्र की कौन–कौन सी विशेषताएँ आप अपनाना चाहेंगे और क्यों?"

इसी प्रकार 'क्षितिज' (कक्षा 10) का पाठ 'नेताजी का चश्मा' नेताजी सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति से जुड़ी एक कहानी है। इस कहानी में बच्चों में मौजूद देशभक्ति की भावना को उजागर करने की कोशिश की गई है। इस पाठ के प्रश्न–अभ्यासों में एक बहुत महत्वपूर्ण बिंदु दिया गया है – "सीमा पर तैनात फौजी ही देश–प्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक कार्यों में किसी न किसी रूप में देश–प्रेम प्रकट करते हैं; जैसे – सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाना, पर्यावरण संरक्षण आदि। अपने जीवन–जगत से जुड़े ऐसे और कार्यों का उल्लेख कीजिए और उन पर अमल भी कीजिए।"

यदि शिक्षक इस बिंदु पर बच्चों के साथ आत्मीयता और संवेदनशीलता के साथ खुलकर विचार–विमर्श कर सकें तो यह बच्चों में देशभक्ति की भावना विकसित करने और उसे मज़बूत करने का एक महत्वपूर्ण अवसर बन सकता है। लेकिन इस प्रकार के उदाहरण अपर्याप्त और आधे–अधूरे से लगते हैं क्योंकि इन दो–चार प्रश्नों या गतिविधियों मात्र से बच्चों में देशभक्ति की भावना के विकास को सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। यह कार्य एक दिन या एक साल का नहीं है बल्कि एक सतत प्रक्रिया है जिसके लिए लगातार कोशिश करनी होगी, वह भी सही दिशा में, और सही भावना से।

बच्चों में देशभक्ति की भावना के विकास में शिक्षक की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण है। पाठ्यसामग्री चाहे जितनी भी उत्कृष्ट हो, शिक्षक की संवेदनशीलता और देशभक्ति के प्रति उसका नज़रिया ही निर्धारित करेगा कि उसकी कक्षा में पाठ्यसामग्री का प्रयोग रस्मी तरीके से किया जाएगा या सही भावना से।

इन्हीं महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखकर दिल्ली की शिक्षा–व्यवस्था ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। भारत की आज़ादी के अमृत–महोत्सव के इस वर्ष में दिल्ली के स्कूलों में देशभक्ति पाठ्यक्रम शुरू हो रहा है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य ही यह है कि बच्चे न केवल अपने क्रांतिकारियों और शहीदों को याद रखें बल्कि अपने भारत की संस्कृति और इतिहास के प्रति गौरव की भावना का विकास कर सकें। वे उन मूल्यों और गुणों का विकास कर सकें जो एक देशभक्त नागरिक के रूप में प्रत्येक भारतवासी में होने ज़रूरी हैं। वे देश के प्रति अपने उत्तरदायित्व समझ सकें और देश की उन्नति में अपना योगदान दे सकें।

अक्षय कुमार दीक्षित
मेंटर टीचर एवम् सदस्य,
देशभक्ति पाठ्यक्रम समिति
राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय,
जी ब्लॉक, साकेत, नई दिल्ली

बनाएँगे अपनी राह खुद

एंत्रप्रेन्योर माइंडसेट करिकुलम/बिज़नेस ब्लास्टर्स

भारत आज दुनिया के सबसे ज़्यादा युवा आबादी वाले देशों में शामिल है। देश में युवाओं की संख्या (18 से 29 साल) 261 मिलियन है जो बहुत–से देशों की कुल आबादी से भी ज़्यादा है। पर युवाओं को रोज़गार के लिए भटकना पड़ रहा है। हमारे स्कूलों–कॉलेजों से हर साल जॉब सीकर्स की फौज निकल रही है पर जॉब प्रोवाइडर बहुत कम हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि अपने शैक्षणिक संस्थानों में हम बच्चों को डिग्रियाँ तो बाँट रहे हैं लेकिन उन्हें ऐसी स्किल्स नहीं दे रहे जिससे पढ़ाई पूरी होने के बाद उन्हें जॉब मिल सके। इससे बेरोज़गारी की संख्या साल दर साल बढ़ रही है क्योंकि जॉब माँगने वाले तो बहुत लोग हैं लेकिन जॉब देने वाले न के बराबर हैं और किसी भी देश की अर्थव्यवस्था नौकरी पाने वालों से नहीं नौकरी देने वालों से बनती है। ये देश के लिए एक बड़ा सवाल है।

भारत के संदर्भ में कुछ फैक्ट्स:–

1. देश की 22% आबादी (लगभग 261 मिलियन) 18 से 29 साल के उम्र की है।
2. सेंटर फॉर मोनेटरिंग इंडियन इकॉनमी (CMIE) द्वारा जारी आँकड़ों के अनुसार देश में 20–24 आयु वर्ग के 37.9% युवा बेरोज़गार हैं।
3. सितंबर, 2021 महीने में भारत की कुल बेरोज़गारी दर 8.20% रही है।
4. 2020 में दुनिया में केवल 85 देशों की बेरोज़गारी दर ही भारत से ज़्यादा थी जबकि भारत से कम बेरोज़गारी दर वाले देशों की संख्या 123 थी।

ये आँकड़े दिखाते हैं कि युवाओं की इतनी बड़ी आबादी होने के बाद भी उनके पास रोज़गार नहीं है। इसका कारण है कि ये सभी युवा पढ़ाई पूरी करने के बाद जॉब सीकर के रूप में निकलते हैं। लेकिन इतनी बड़ी आबादी को जॉब प्रोवाइड करने के लिए मैकेनिज्म नहीं है। इसलिए ये बेहद ज़रूरी है कि अपनी पढ़ाई पूरी होने के बाद एंट्रेप्रेंयूरिअल माइंडसेट के साथ बाहर निकले ताकि वे जॉब ढूँढने के बजाय जॉब क्रिएटर बनें। वे एंत्रप्रेन्योर बनें या बेशक जॉब करें लेकिन उनमे एंत्रप्रेन्योर माइंडसेट होना बेहद ज़रूरी

है ताकि वे जिस क्षेत्र में अपना करियर चुनें, वहाँ बेहतरीन प्रदर्शन कर सकें।

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए और अपने स्कूलों से पढ़कर निकलने वाले बच्चों को सशक्त बनाने के लिए दिल्ली सरकार ने 2019 में अपने स्कूलों में एंत्रप्रेन्योर माइंडसेट करिकुलम (ईएमसी) की शुरुआत की। ईएमसी के तहत ही बिज़नेस ब्लास्टर्स प्रोग्राम शुरू किया गया। अपने पायलट फेज में इस प्रोग्राम के नतीजे शानदार रहे। पायलट फेज में 9 ग्रुप्स में 41 बच्चे शामिल रहे। इन बच्चों को प्रति छात्र 1–1 हज़ार रुपयों की सीड मनी दी गई। बच्चों ने इससे अपने छोटे–छोटे एंटरप्राइज शुरू किए और अपने टैलेंट, जोखिम लेने की क्षमता, टीम वर्क व एंट्रेप्रेंयूरिअल माइंडसेट के दम पर सीड मनी को कई गुणा मुनाफे में बदल दिया। 7 सितंबर को जब इन बच्चों ने देश के नामी एंत्रप्रेन्योरर्स, मीडिया हाउस और हज़ारों की संख्या में मौजूद स्कूल प्रमुखों व ईएमसी को–ऑर्डिनेटर के सामने पूरे आत्मविश्वास और बिना किसी झिझक के अपने प्रोजेक्ट्स के बारे में बताया व उनके सवालों के जवाब दिए तो लोग दंग रह गए कि क्या ये वाकई में दिल्ली के सरकारी स्कूलों के बच्चे हैं जिन्होंने सबको लाजवाब कर दिया है। इन बच्चों ने ये साबित कर दिखाया कि

भारत के स्कूलों में ईएमसी और बिज़नेस ब्लास्टर्स प्रोग्राम का होना क्यों ज़रूरी है?

"आज भारत में लगभग 25 करोड़ लोग बेघर हैं और लाखों सिविल इंजीनियर बेरोज़गार घूम रहे हैं। 18 करोड़ लोग आज भी मुल्क में भूखे सोते हैं पर एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएट होकर निकल रहे बच्चों के पास रोज़गार नहीं है। देश में हर साल हज़ारों विद्यार्थी केमेस्ट्री से पीएचडी कर रहे हैं फिर भी देश में दवाइयों की कमी है। ये विडंबना है और सवाल है एजुकेशन सिस्टम पर। हमें ये देखना होगा कि एजुकेशन सिस्टम में कहीं न कहीं कोई दिक्कत रह गई है।

एजुकेशन सिस्टम में सबसे बड़ी कमी यही है कि हम अपने बच्चों को नॉलेज तो दे रहे हैं लेकिन एंत्रप्रेन्योर माइंडसेट नहीं दिया। हम उन्हें मेहनत करना सिखा रहे हैं, टैलेंटेड बना रहे हैं लेकिन उनके अंदर एंत्रप्रेन्योर बनने की हिम्मत पैदा करने में असफल रहे हैं। हमारे इन टैलेंटस को विदेशी कंपनियाँ लेकर चली गई और इससे उस देश की अर्थव्यवस्था को फायदा हुआ। आज भारत के हर एक घर में ये सपना देखा जाता है कि किसी न किसी तरह हमारे बच्चों को अमेरिका या यूरोप के किसी देश की कंपनी में नौकरी मिल जाए। लेकिन हम ये नहीं सोचते कि हमारे बच्चे अपने टैलेंट और एंट्रेप्रेंयूरिअल माइंडसेट के साथ भारत में भी ऐसी कंपनी खड़ी कर दें कि अमेरिका और यूरोप के बच्चे भी भारत की इन कम्पनियों में नौकरी करने का सपना देखें।

>>>>

बिज़नेस ब्लास्टरर्स प्रोग्राम इसके समाधान के रूप में उभर कर सामने आएगा। इस प्रोग्राम से बच्चों में क्रिटिकल–थिंकिंग, लीक से हटकर सोचना, प्रॉब्लम सोल्विंग, क्रिएटिविटी, लीडरशिप स्किल्स, अवसरों को पहचानना, जोखिम लेना, लगातार सीखते रहना, असफलताओं से सीखना, हर काम में प्रोफेशनल एप्रोच अपनाना, बेहतर ढंग से कम्युनिकेट करना, टाइम मैनेजमेंट, किसी काम को करने के मल्टीपल एप्रोच को अपनाना आदि जैसे स्किल्स विकसित होंगे।

बिज़नेस ब्लास्टरर्स प्रोग्राम की शुरुआत देश की तरक्की की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी। ये प्रोग्राम विकसित भारत की नींव बनेगा। यदि हम देश के सभी स्कूलों में एंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट करिकुलम और बिज़नेस ब्लास्टरर्स प्रोग्राम शुरू कर दें तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपनी पाठ्यपुस्तकों में इतिहास बदल देंगे कि भारत विकासशील देश नहीं बल्कि विकसित देश है। बिज़नेस ब्लास्टरर्स प्रोग्राम भारत को विकासशील देश से विकसित देश बनाएगा। और देश की असल तस्वीर भी बदलेगा। दिल्ली में इस प्रोग्राम की शुरुआत के साथ वह दिन दूर नहीं जब दिल्ली के स्कूलों से पढ़ कर निकलने वाले बच्चे नौकरी पाने की लाइन में लगने के बजाय नौकरी देने वालों की श्रेणी में खड़े होंगे। और यदि नौकरी भी करेंगे तो वह किसी नौकरी के लिए लाइन में नहीं लगेंगे, बल्कि नौकरी उनके पीछे भागेगी।''

आदरणीय उप–मुख्यमंत्री एवं शिक्षा मंत्री
श्री मनीष सिसोदिया

दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों में टैलेंट की कोई कमी नहीं है।

आज पूरे देश के स्कूलों में ईएमसी व बिज़नेस ब्लास्टरर्स जैसे कार्यक्रमों को अपनाने की ज़रूरत है। हम चाहते हैं कि हमारे छात्र कुछ भी करें पर हमेशा एक एंत्रप्रेन्योर की तरह सोचें–बड़े सपने देखने, नए और चुनौतीपूर्ण लक्ष्यों को आज़माने, आसपास के अवसरों को पहचानने में सक्षम होने और फिर उन्हें पूरा करने के लिए योजना बनाने और उस पर काम करने के लिए तैयार रहे। असफलताएँ जीवन का एक हिस्सा हैं। हमारे छात्रों को उनसे बाहर निकलने में सक्षम होना चाहिए। सफलता और असफलता दोनों का विश्लेषण करना चाहिए और उनसे सीखना चाहिए। साथ ही उन्हें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए लगातार प्रयास करना चाहिए। ये कार्यक्रम बच्चों में एक ग्रोथ माइंडसेट विकसित करने और छोटे अवसरों को भी पहचानने पर फोकस करेगा। और ऐसी पीढ़ी तैयार करेगा जो नौकरी चाहने वाली नहीं बल्कि नौकरी देने वाली बनेगी।

सुमित कुमार

2,36,522
मिशन एडमिशन

समीर शुरू से पढ़ाई और खेल दोनों में अव्वल रहा है। वह अभी तक दिल्ली के एक प्राइवेट स्कूल में क्लास 8 में पढ़ाई करता था, पर 2021–22 सत्र में उसने दिल्ली की एक सरकारी स्कूल में नौंवी क्लास में एडमिशन के लिए रजिस्ट्रेशन कराया है। घर में पैसों की कोई तंगी नहीं है फिर भी समीर के पेरेंट्स का ये फैसला दिल्ली के सरकारी स्कूलों में आई शिक्षा क्रांति का प्रमाण है। समीर के माता–पिता का यह मानना है कि दिल्ली की सरकारी स्कूलों में बहुत सारे नए बदलाव आए हैं। बच्चों में 21वीं सदी के स्किल्स डेवलप करना, देशभक्ति का मतलब समझाना और उनमें पढ़ाई के साथ साथ नैतिक मूल्यों का भी विकास करना। आईबी जैसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ शिक्षा में साझेदारी, टीचर्स को सिंगापुर, कैंब्रिज, फ़िनलैंड, आईआईएम जैसे संस्थानों से प्रशिक्षण दिलवाना, स्कूलों के इंफ्रास्ट्रक्चर को वर्ल्ड क्लास बनाना, इन सब बिंदुओं को देखते हुए दिल्ली के सरकारी स्कूलों से बेहतर कोई दूसरा विकल्प नहीं है। इस तरह समीर के माता–पिता के लिए समीर का सरकारी स्कूल में एडमिशन करवाना उनकी मजबूरी नहीं, बल्कि मंजूरी है।

यहाँ के सरकारी स्कूलों में बहुत–सी बातें सोच से आगे बढ़ चुकी हैं। अगर कोई व्यक्ति जो दिल्ली का नहीं है और वह दिल्ली के किसी भी सरकारी स्कूल में जाता है तो फिर वह उस स्कूल का कायल हो जाता है। उसे यहाँ के सरकारी स्कूल तमाम आधुनिक सुविधाओं से लैस एक प्राइवेट स्कूल सरीखे नजर आते हैं।

यहाँ के सरकारी स्कूलों ने एडमिशन ट्रेंड को बदल दिया है। पहले बच्चे सरकारी से प्राइवेट स्कूलों की तरफ बढ़ते थे, पर अब यह बात गुज़रे हुए दौर की हो गई। सत्र 2021–2022 में लगभग 2,40,000 बच्चे प्राइवेट स्कूलों से निकल कर गवर्नमेंट स्कूलों में आने की तैयारी में हैं और इन्होंने अपना रजिस्ट्रेशन भी करा लिया है। सरकारी स्कूलों में वर्ल्ड क्लास इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ क्वालिटी एजुकेशन ने इसमें बड़ी भूमिका निभाई है।

इस सत्र के लिए करीब 2,40,000 बच्चे सरकारी स्कूलों में दाखिले के लिए आवेदन कर रहे हैं। इनमें क्लास

नर्सरी से लेकर 12वीं तक के बच्चे शामिल हैं। शिक्षा निदेशालय की ओर से जारी आँकड़ों के मुताबिक करीब 1,030 सरकारी स्कूलों में नर्सरी से क्लास 12वीं तक के लिए 2,36,522 आवेदन प्राप्त हुए हैं। इस साल दिल्ली सरकार के स्कूलों में नामांकित बच्चों की संख्या 17.67 लाख तक पहुँच गई है। 2020–21 में ये आँकड़ा 16.28 लाख रहा, जबकि 2019–20 में यह करीब 15.05 लाख था।

बदली है। कोरोना काल ने शिक्षा व्यवस्था के समक्ष कई चुनौतियाँ तो पेश की व बच्चे दिन–रात घर में बंद थे। इस वक्त दिल्ली सरकार ने बच्चों के मेंटल और सोशल हेल्थ पर खासा ध्यान दिया। मेगा पीटीएम की मदद से बच्चों के अभिभावकों को इस स्थिति से मुकाबला करने को तैयार किया गया।

इसके साथ ही शहीद–ए–आज़म भगत सिंह के जन्मदिवस 27 सितंबर को

यहाँ के सरकारी स्कूलों ने एडमिशन ट्रेंड को बदल दिया है। पहले बच्चे सरकारी से प्राइवेट स्कूलों के तरफ बढ़ते थे, पर अब यह बात गुज़रे हुए दौर हो गई। सत्र 2021-2022 में लगभग 2,40,000 बच्चे प्राइवेट स्कूलों से निकल कर गवर्नमेंट स्कूलों में आने की तैयारी में हैं और इन्होंने अपना रजिस्ट्रेशन भी करा लिया है। सरकारी स्कूलों में वर्ल्ड क्लास इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ क्वालिटी एजुकेशन ने इसमें बड़ी भूमिका निभाई है।

दिल्ली सरकार ने सरकारी स्कूलों में एडमिशन लेने के लिए ट्रान्सफर सर्टिफिकेट की ज़रूरत को खत्म कर दिया हैं जिससे बच्चों को सरकारी स्कूलों में एडमिशन लेने में सहूलियत मिलेगी।

सरकारी स्कूलों की ये तसवीर सरकार की तमाम सफल योजनाओं के बाद

दिल्ली के सरकारी स्कूलों में देशभक्ति पाठ्यक्रम की शुरुआत की जा रही है। इस पाठ्यक्रम को अपनाने के पीछे बच्चों को उनकी देश के प्रति जिम्मेदारी का एहसास कराना है, देश के प्रति प्रेम और सम्मान जगाना है। इसके अलावा दिल्ली सरकार बच्चों में एंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट करिकुलम के तहत एंत्रप्रेन्योर

बनने के गुण को डेवलप करने के लिए स्कूलों में ये पाठ्यक्रम शुरू कर चुकी है।

स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सीलेंस, दिल्ली स्किल एंड एंटरप्रेन्योर यूनिवर्सिटी और दिल्ली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी जैसे संस्थान दिल्ली की क्वालिटी एजुकेशन के उदाहरण हैं।

दिल्ली के सरकारी स्कूलों के बारहवीं और दसवीं के रिजल्ट यहाँ के सरकारी स्कूलों की कामयाबी की कहानी बयाँ करते हैं। इस बार बारहवीं का पासिंग परसेंटेज 99.96 फीसदी रहा। पिछले चार सालों में ये आँकड़ा लगातार बढ़ रहा है। साल 2018 में यह आँकड़ा 90. 64% था, 2019 में ये बढ़कर 94.24% हुआ, 2020 में 97.92% रहा और 2021 में यह 99.96% हो गया। अब इन बढ़ते पासिंग परसेंटेज को देख कर लगता है कि जल्द ही अब दिल्ली के सरकारी स्कूल 100 फीसदी परिणाम के मुकाम को भी हासिल करेंगे।

कुछ ऐसी ही सफल कहानी है दसवीं के रिजल्ट की। 2018 में बच्चों का पासिंग प्रतिशत केवल 68.9 था, 2019 में ये आँकड़ा 71.58% हो गया, 2020 में 82.61% पहुँचा और फिर 2021 यह आँकड़ा 97.52% पर पहुँच गया।

शानदार रिजल्ट और बेहतरीन शिक्षा व्यवस्था के चलते सरकारी स्कूलों में ऐतिहासिक क्रांति आई है जिससे देश में पहली बार इतनी बड़ी तादाद में बच्चे प्राइवेट स्कूलों से सरकारी स्कूलों की तरफ आ रहे हैं।

श्रीया

आप अपने विचार और सुझाव हमें मेल कर सकते हैं ।

aapkepatr.dillishiksha@gmail.com

काउंसलिंग सेशन्स ने बदली सोच

मेंटरिंग आसान नहीं थी। असली चुनौती तो तब शुरू हुई जब मुझे अपने मेंटी स्कूलों में काम करने का मौका मिला। उनमें से अधिकांश स्कूलों में ये समस्या थी कि कई बार बहुत से बच्चे स्कूल आने के बाद लंच टाइम तक नदारद हो जाते थे। अमूमन ये हफ्ते में एक बार ज़रूर होता था।

पर किसी ने ठीक ही कहा है कि चुनौती ही आपका रास्ता तैयार करती है और यही आपको आपकी मंज़िल तक पहुँचाती है। यदि चुनौती न हो तो विकास रुक जाता है, अर्थात विकास का रास्ता चुनौतियों से होकर गुज़रता है। यह समस्या बड़ी क्लासों में और भी अधिक थी। मैंने इसे ठीक करने का प्लान बनाया। मैंने सभी सब्जेक्ट टीचर्स और क्लास टीचर्स से व्यक्तिगत रूप से मिलकर ऐसे बच्चों की लिस्ट तैयार की जिनमें यह प्रवृत्ति ज़्यादा थी।

लिस्ट में मैंने बच्चों के इंटरेस्ट, नॉलेज, एप्टीट्यूड, रिजल्ट और पर्सनालिटी के आधार पर प्रश्नावली तैयार की। इसे तैयार करने में मेरे "वोकेशनल गाइडेंस एवम करियर काउंसलिंग" में किया गया पीजी डिप्लोमा काफी मददगार साबित हुआ। बच्चों की लिस्ट तैयार करने के बाद मैंने सभी बच्चों के बारे में उनके क्लास टीचर और सब्जेक्ट टीचर से मिलकर विस्तृत जानकारी लेना शुरू किया। मैंने लगभग सत्तर बच्चों के बारे में एक तरह का प्लानर कार्ड तैयार किया ताकि उनके पेरेंट्स से इन बच्चों के बारे में गहरी चर्चा की जा सके। उसके बाद मैंने इस पर स्कूल प्रमुख से मीटिंग कर अपनी रणनीति को साझा किया कि उन बच्चों की बेहतरी के लिए उनके पेरेंट्स के साथ एक स्पेशल काउंसलिंग सेशन रखेंगे और हर रोज़ तकरीबन पाँच बच्चों और उनके पेरेंट्स से अलग–अलग सेशन में बातचीत के माध्यम से उनकी समस्याओं को समझते हुए उनको मोटिवेट करेंगे। इस रणनीति पर स्कूल प्रमुख का सहयोग और कुछ साथी मेंटर्स के सुझाव भी मददगार साबित हुए।

तकरीबन तीन महीने तक यही क्रम चलता रहा। मैं जब भी उस स्कूल में जाता तो उन बच्चों के पेरेंट्स को फोन

करके उनके द्वारा दिए गए समय पर उनके साथ विस्तृत चर्चा करता था और उन्हें भी उनकी ज़िम्मेदारियों और बच्चों की एजुकेशन में उनके इन्वॉल्वमेंट के लिए मोटिवेट करता था। इस बीच कई ऐसे तजुर्बे हुए जो बहुत संवेदनशील थे। ऐसे बच्चे भी मिले जिनके माता–पिता ही इस दुनिया में नहीं थे और वे बच्चे किसी तरह अपनी स्कूलिंग बचाने की जद्दोजहद में लगे थे। कुछ ऐसे बच्चे भी थे जिनके परिवार गंभीर आर्थिक संकट से गुज़रे थे या कुछ बच्चे तो बाहर काम करने के बाद थकान लेकर विद्यालय आते थे। ऐसे में पढ़ाई को लेकर रुचि सकारात्मक न होना भी एक आम समस्या थी।

स्कूल में शुरू किए गए इन काउंसलिंग सेशंस से पेरेंट्स को यह यकीन ज़रूर हो गया कि पूरा एजुकेशन सिस्टम बच्चों की बेहतरी के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है और हमारी कोशिश है कि तसवीर बदलनी चाहिए। उन्हें इस बात का विश्वास हो गया कि हम स्वयं उनके हर सुख–दुख को महसूस करते हैं। बच्चों को इस तरह से हमसे बात करके एक अलग तरह की खुशी मिली और हमें भी इस बात की खुशी मिली कि जिस उद्देश्य के साथ हमने इस मिशन को शुरू किया था वह अपने उद्देश्य को प्राप्त करने लगा था। बातों में आत्मीयता ने उनमें ऊर्जा का संचार करना शुरू कर दिया।

धीरे–धीरे तकरीबन सत्तर से अस्सी बच्चों और उनके पेरेंट्स के साथ ऐसे

धीरे–धीरे तकरीबन सत्तर से अस्सी बच्चों और उनके पेरेंट्स के साथ ऐसे सेशन पूरे किए गए, जिसमें लगभग तीन महीने का समय लगा। इस वक्त ने न केवल पेरेंट्स और बच्चों की सोच विद्यालय के प्रति बदली बल्कि टीचर्स का भी नजरिया काफी बदल गया कि व्यक्तिगत रूप से बच्चों और पेरेंट्स से मिलकर उनकी समस्याओं पर बात करके कितनी आसानी से समाधान तलाशे जा सकते हैं!

सेशन पूरे किए गए जिसमें लगभग तीन महीने का समय लगा। इस वक्त ने न केवल पेरेंट्स और बच्चों की सोच स्कूल के प्रति बदली बल्कि टीचर्स का भी नजरिया काफी बदल गया कि व्यक्तिगत रूप से बच्चों और पेरेंट्स से मिलकर उनकी समस्याओं पर बात करके कितनी आसानी से समाधान तलाशे जा सकते हैं!

इसका नतीजा यह हुआ कि स्कूल में न केवल बच्चों की उपस्थिति बढ़ी बल्कि बच्चों के व्यवहार में भी पहले की अपेक्षा काफी सकारात्मक परिवर्तन आया। अब पेरेंट्स ने भी लर्निंग–प्रोसेस में टीचर्स को सपोर्ट करने का निश्चय किया। अब न केवल बच्चे वरन पेरेंट्स भी स्कूलिंग और शिक्षण व्यवस्था पर अपनी राय देने लगे हैं। निश्चित ही इन उपायों को दूसरे स्कूलों में भी अपनाया गया और अनुकूल सफलता मिली। हालाँकि मेंटरिंग का सफर अभी जारी है और ऐसे बहुत सारे बच्चे, पेरेंट्स और स्कूल हैं जहाँ इस तरह के सेशन की आवश्यकता है।

मंजीत कुमार
मेंटर टीचर
राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय,
मानसरोवर पार्क न.1, नई दिल्ली

प्रकृति की गोद में क्लास

दुनिया के अधिकतर देशों में आधुनिक स्कूली व्यवस्था का उदय औद्योगिक क्रांति के बाद हुआ है। अधिकतर विद्वान ऐसा मानते हैं कि यही एक वजह रही कि ज़्यादातर स्कूलों को फैक्ट्री की तर्ज पर बनाया गया और पढ़ाई–लिखाई की व्यवस्था भी फैक्ट्री में होने वाले कामकाज के अनुरूप ही ढाली गयी। शिक्षा शास्त्री इसे शिक्षा का फैक्ट्री मॉडल कहते हैं।

अलग–अलग समय पर दुनिया भर में आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप शिक्षा को ढ़ालने की कोशिश की गई और शिक्षा के इस फैक्ट्री मॉडल को चुनौती दी गई। भारत में रविंद्रनाथ टैगोर ने प्रकृति के साथ शिक्षा को जोड़कर देखने की पुरजोर वकालत की और उन्होंने शांतिनिकेतन जैसी संस्था की स्थापना की। महात्मा गांधी हाथ की कला आधारित शिक्षा की वकालत करते थे और उनका मानना था कि ऐसी शिक्षा व्यवस्था हमें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

अफसोस! टैगोर, गांधी और अन्य विद्वानों के द्वारा शिक्षा के संबंध में किए गए प्रयोग कुछ चुनिंदा जगहों पर ही सिमट कर रह गए। मुख्यधारा के अधिकतर स्कूल आज भी फैक्ट्री मॉडल को ही आत्मसात किए हुए हैं। प्रकृति से दूर, तरह–तरह के कमरों में बंद होकर दुनिया–भर का ज्ञान बच्चों के मस्तिष्क में उड़ेलने का प्रयास किया जाता है। उदाहरण के लिए, पौधे या वृक्ष के भागों के बारे में भी चित्र या चार्ट से पढ़ाया जाता है, वास्तविक पेड़ या पौधे के करीब जाकर नहीं।

अनेक सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों की तरह मेरे स्कूल में भी सामान्य कक्षाओं के साथ–साथ अनेक तरह के विशेष कक्ष मौजूद थे, जैसे कि विज्ञान–प्रयोगशाला, गृह– विज्ञान कक्ष, भूगोल–कक्ष, रसायन– प्रयोगशाला, चित्रकला–कक्ष, गणित– प्रयोगशाला आदि। इन सब के होते हुए भी मेरे विद्यालय के अनेक शिक्षकों को यह महसूस हो रहा था कि इन कमरों की चारदीवारी के अंदर पढ़कर ही बच्चों की शिक्षा संपूर्ण नहीं हो सकती। क्यों न विद्यालय में कुछ ऐसा किया जाए कि बच्चे प्रकृति के बीच रहकर न केवल उसके सौंदर्य का आनंद उठाएँ बल्कि प्राकृतिक परिवेश में बैठकर पठन–पाठन भी कर सकें।

कुछ विचार–विमर्श के बाद हम शिक्षकों के बीच से ही यह सुझाव निकालकर आया कि विद्यालय में एक ऐसा विशेष स्थान बनाया जाए जहाँ पर हम सब शिक्षक अपने–अपने विषय को बच्चों को बंद कमरे में बैठाकर पढ़ाने की बजाय खुले आसमान के नीचे, खुली हवा में पढ़ा सकें। हमें विश्वास था कि

ऐसे प्राकृतिक परिवेश में हम बच्चों को प्रभावशाली ढंग से पढ़ा सकेंगे और बच्चे भी आसानी और रुचि से पढ़ाई कर सकेंगे। हमारे मस्तिष्क में ऐसे स्थान की कल्पना थी जहाँ विद्यार्थी शिक्षा के नियम – 'करो और सीखो' या 'खेलो और सीखो' के अनुसार प्रसन्नता से अध्ययन कर सकेंगे, अवधारणाओं को आसानी से समझ सकेंगे।

हमनें इस कल्पना को मिलकर ज़मीन पर उतारने का फैसला कर लिया। इसके लिए हमें स्कूल के प्रवेश द्वार के

पास स्थित 'यूथ व ईको क्लब वाटिका' उपयुक्त स्थान लगा। क्यों न इस स्थान को ही खुली क्लास के लिए विकसित कर लें! इस विचार को सबने पसंद किया।

विद्यालय के सभी अध्यापकों की लगन, मेहनत और योगदान से इस वाटिका के बीच बिजली से चलने वाले मध्यम आकार के फव्वारे का निर्माण करवाया गया। इस फव्वारे के निर्माण और संरचना के लिए प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री, रंग, पत्थर, आकार, दिशा और वहाँ पर रखे जाने वाले पौधों आदि का विशेष ध्यान रखा गया।

वाटिका में ये फव्वारा चारों ओर से अनेक प्रकार के फलों–फूलों और औषधियुक्त पौधों से सजा है। इनके अलावा यहाँ पर स्नेक–प्लांट, एलोवेरा, नीम, तुलसी, नींबू और अमरूद आदि के पौधे भी मौजूद हैं।

विद्यालय के प्रवेश द्वार पर बना ये फव्वारा न केवल विद्यालय का आकर्षण केंद्र बन गया है बल्कि अध्यापकों के लिए बच्चों को पढ़ाने और विद्यार्थियों के सीखने का महत्वपूर्ण स्थान बन गया। अब हम सभी शिक्षक इस स्थान का प्रयोग बच्चों को पढ़ाने के लिए खुशी–खुशी और आसानी से कर लेते हैं।

उदाहरण के लिए, विज्ञान विषय के अध्यापक प्रसन्नतापूर्वक विद्यार्थियों को सामान्य विज्ञान व्यावहारिक ढंग से पढ़ा पाते हैं और समझा पाते हैं। जैसे कि – पौधे के भाग, फूल के भाग, पौधों में प्रजनन, औषधि वाले पौधों के गुण, पौधों के विकास की प्रक्रिया और आवश्यक तत्व, जल का महत्व, बिजली द्वारा मोटर पम्प के चलने की तकनीक विधि, मिट्टी के गुण तथा प्रकार आदि। विद्यार्थी आसानी से खुशी–खुशी बहुत कुछ सीख लेते हैं।

गणित विषय के अध्यापक अलग–अलग स्तर के बच्चों को यहाँ लाकर मूलभूत बातें बहुत अच्छे तरीके से समझाते हैं। जैसे– लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई, गहराई, ज्यामितीय वस्तु के आकार की जानकारी–त्रिभुज, आयत, वर्ग, गोला, वृत, बेलन, शंकु, समरूप और गैर–समरूप वस्तुएँ, आँकड़ों का प्रबंधन, उपस्थित पौधों की संख्या और गुणों के आधार द्वारा दण्ड – आलेख, आयत–चित्र समझाना आदि।

इसी प्रकार अन्य विषयों के अध्यापक भी अपनी – अपनी सुविधानुसार इस विशेष स्थान का प्रयोग भली–भाँति करते हैं।

इस विशेष स्थान के रख रखाव के लिए क्लास छह से नौवीं तक के उन छात्र–छात्राओं का एक समूह बनाया गया जो प्रकृति से विशेष लगाव रखते हैं। इस ग्रुप का नाम "ग्रीन– ब्रिगेड" रखा

गया। वाटिका के रख–रखाव के काम के समय पहनने के लिए 'ग्रीन–ब्रिगेड' समूह के छात्र–छात्राओं को विद्यालय द्वारा स्पेशल टी–शर्ट भी दी गई। चूँकि वाटिका का रख–रखाव ग्रीन–ब्रिगेड के समूह द्वारा ही संभव हो पाता है इसलिए स्कूल के पुरस्कार वितरण समारोह के दिन इन बच्चों को पुरस्कार से भी सम्मानित किया जाता है।

एक कहावत बहुत प्रचलित है कि हम घोड़े को पानी तक ले जा सकते हैं लेकिन उसे पानी पिला नहीं सकते। सीखने के संदर्भ में भी यह बात कही जा सकती है। स्कूल की बड़ी जिम्मेदारी सीखने लायक वातावरण तैयार करने की है। मेरे स्कूल के अध्यापकों ने एक ऐसे ही वातावरण के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इसी का प्रतिफल है कि यह विशेष स्थान विद्यालय के सभी टीचर्स और विद्यार्थियों के लिए निरंतर ऊर्जा पाने का स्रोत बन गया है।

देश कुमार अरोड़ा
टीजीटी (गणित)
सर्वोदय सहशिक्षा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, डी–ब्लॉक वसंत कुंज, नई दिल्ली

सखी लाइब्रेरी

ओपन लाइब्रेरी और बुक बैंक

सुनो, लाइब्रेरी मुझे तुमसे कुछ कहना है। अगर तुम न होती तो यह जीवन कैसा होता? तुम्हारे बिना स्कूल की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। हर कार्यालय में, विश्वविद्यालय में और कई बार केवल लाइब्रेरी जाकर भी मैं तुमसे मिला हूँ।

लाइब्रेरी यानी किताबों का अपना घर। एक पुस्तकालय के बिना किसी भी संस्थान की रचना करना, मानो उसे अधूरा रखना है।

पुस्तकालय में प्रवेश करते ही एक ऊर्जा सी मिलती है। ऐसा लगता है, यहाँ आए हैं तो कुछ सीखकर ही जाएँगे।

लाइब्रेरी, तुम ज्ञान का सागर हो। अनंत संभावनाओं का भण्डार हो। तुमसे मिलना मानो पूरी दुनिया से मिलना है। बल्कि

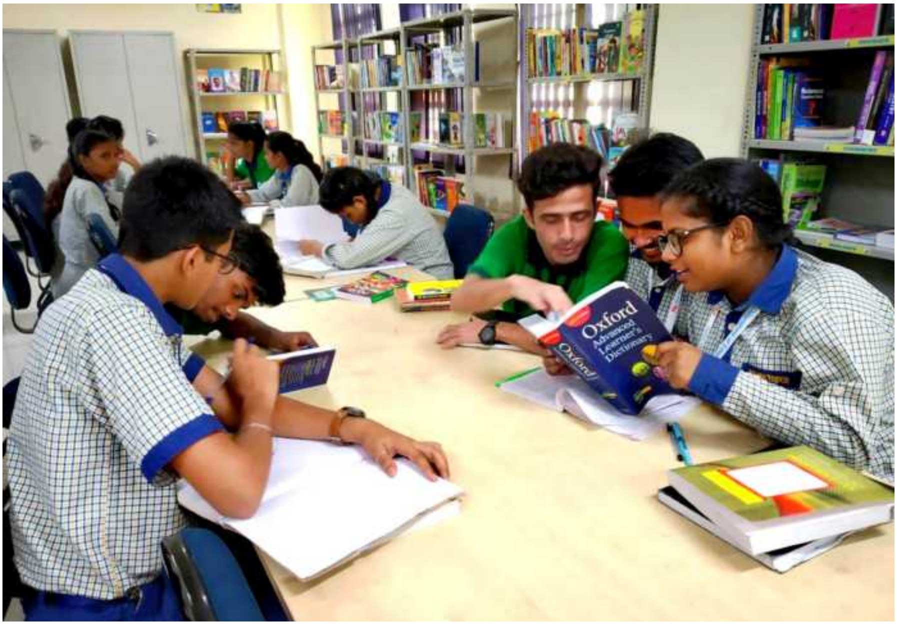

यूँ कहूँ कि दुनिया तो केवल इंट्रो यानी परिचय कराती है पर लाइब्रेरी तो किसी भी विषय का संपूर्ण ज्ञान देने में सक्षम है। तुमने मुझे प्रेमचंद से मिलवाया। विश्व को मैंने तुम्हारी पुस्तकों से ही जाना है। कहानी, कविताएँ, नाटक, सामान्य जानकारी सब कुछ तो है तुम्हारे इस अनोखे संसार में। कई बार तो मुझे लगता है कि तुम केवल किताबों की ही नहीं बल्कि सभी सभ्यताओं और संस्कृतियों की भी संरक्षक हो।

मुझे तुम्हें कुछ और भी बताना है। अब तुम्हारा यानी लाइब्रेरी का पारंपरिक स्वरूप बदलता जा रहा है। केवल एक कमरा और उसमें लगी किताबें ही लाइब्रेरी नहीं कहलाती बल्कि डिजिटल फॉर्म में ढेर सारी किताबों की ई–लाइब्रेरी भी अब हम देखते हैं तो कभी एक चलती फिरती वैन भी लाइब्रेरी बन जाती है।

ऐसे ही नवाचारों के बीच हमारे विद्यालय यानी 'स्कूल ऑफ एक्सीलेंस, खिचड़ीपुर' में भी एक ओपन लाइब्रेरी और 'ओल्ड बुक्स बैंक' की स्थापना की गई है जिसमें विद्यार्थियों और अध्यापकों के द्वारा दान में दी गई पुस्तकों का संचयन किया जा रहा है। जो किताबें पहले विद्यार्थी रद्दी में बेच देते थे या यूँ ही फेंक देते थे, वे अब बड़े ही जोश के साथ ओपन लाइब्रेरी में किताबें दान

देने आते हैं और जब यह देखते हैं कि उनकी किताबें दूसरे विद्यार्थियों के काम आ रही हैं तो उन्हें मन ही मन बहुत प्रसन्नता होती है और उन्हें गर्व भी महसूस होता है। हमारे विद्यालय में इस विचार की शुरुआत हमारी प्रधानाचार्या महोदया 'सीमा राय चौधरी' द्वारा की गई। उन्होंने हमें इसके लिए न सिर्फ प्रोत्साहित किया बल्कि इस दिशा में कार्य करने के लिए कई प्रकार के सुझाव भी दिए। इस ओपन लाइब्रेरी और बुक बैंक में मैं यानी हिमांशु कुलश्रेष्ठ, मोहित गौतम, (टीजीटी कंप्यूटर साइंस) और पूनम पाठक (टीजीटी हिंदी) भी मेरे साथ हैं। अभी इस दिशा में हम पहले कदम पर हैं पर हमें विश्वास है कि धीरे–धीरे यह इतना बड़ा बुक बैंक बनेगा कि कोई भी विद्यार्थी या पुस्तक प्रेमी निराश नहीं लौटेगा। जैसे बूँद–बूँद से सागर बनता है वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा दान में दी गई पुस्तकों से यह ओपन लाइब्रेरी अपनी एक अलग पहचान अवश्य बनाएगी।

अंत में इतना ही कहूँगा कि तुम्हारा महत्त्व तब भी था जब सभ्यता ने जन्म लिया था और आज भी है, जब हम विज्ञान और तकनीक के दम पर मंगल ग्रह पर जीवन तलाश रहे हैं।

तक्षशिला और नालंदा से लेकर अमेरिकन और ब्रिटिश लाइब्रेरी तक हम पहुँचे हैं और आगे भी तुम्हारा यह अनंत सफर ऐसे ही रोचक, ज्ञान से भरा और मज़ेदार रहेगा।

हिमांशु कुलश्रेष्ठ
एसओई, खिचड़ीपुर

हमारे शिक्षक साथियों से अनुरोध है कि जिन्हें "दिल्ली शिक्षा" मासिक पत्रिका प्राप्त नहीं हो पा रही है कृपया अपना सही पता अपने नाम और फोन नंबर के साथ हमें ईमेल करें।

delhishiksha02@gmail.com

बड़े बदलाव की झलक

बदलाव ज़िंदगी में ज़रूरी हैं। बच्चे, टीचर और अभिभावक अगर एक साथ महसूस करने लगे कि बेहतर परिवर्तन हुआ है तो सारी बातें सार्थक लगने लगती हैं।

आज पीटीएम का तीसरा दिन था और मेरी क्लास की पी.टी.एम. भी थी। मेरे आस–पास बहुत–से अभिभावक बैठे थे और मैं उनसे बात करने में मग्न थी। कोरोना के चलते इस बार पीटीएम का लक्ष्य अभिभावक व शिक्षक, दोनों के लिए सामाजिक खुशहाली था। जहाँ कोरोना की दूसरी घातक लहर ने कोई घर ना छोड़ा था वहीं लोगों को जान–माल आदि के नुकसान से भी जूझना पड़ा था। जहाँ तक हमारे बच्चों की बात है तो उन्हें फिर से खड़ा करना हमारा कर्तव्य है। स्कूल ही एक ऐसा स्थान है जहाँ अभिभावक, शिक्षक मिलकर बच्चों के भविष्य का निर्माण करते हैं। आज हम इसीलिए मिल रहे थे।

22 जुलाई 2021 दिन वीरवार था। मैं एक–एक कर अभिभावकों से बात कर ही रही थी कि तभी हमारे आदरणीय डीडीई (जोन) पी.के. त्यागी सर और प्रधानाचार्या महोदया इंदु सेतिया का कक्षा में आना हुआ। उन्हें देख आदर भाव के लिए मैं खड़ी हुई, तो मुझे देख अभिभावक भी खड़े हो गए। उन्हें सर का परिचय तो मालूम नहीं था पर

समझ गए थे कि कोई ऑफिसर ही हैं। आदरणीय सर ने सबको बड़े विनम्र भाव से नमस्कार करते हुए बैठे रहने को कहा और अभिभावकों से बातें करने लगे, जैसे–कैसे हैं आप लोग? घर परिवार में सब ठीक? कैसा लग रहा है इतने समय बाद स्कूल आकर? आपकी किसी भी प्रकार की समस्या, जिसका समाधान हम कर पाएँगे, मिलकर अवश्य करेंगे। ऐसा आजकल कौन कहता है? और कह भी दे तो करता कौन है? पर अभिभावक तो दिल्ली सरकार के द्वारा उठाए गए कदम जैसे राशन वितरण, समय समय पर बच्चों के विषय में बात करना, ऑनलाइन क्लास, वर्कशीट, वैक्सीन कैंप आदि के बारे में बात कर रहे थे जिसे दरकिनार नहीं किया जा सकता। सर के वार्तालाप के बाद मेरी क्लास की रिद्धि और सिद्धि गुप्ता जो कि जुड़वाँ बहनें हैं, उनकी बड़ी बहन उठी। उनकी आँखों में इस परिवर्तन को देख नमी थी। वह बोली, "मैं कृतिका गुप्ता, कानून की पढ़ाई कर रही हूँ, और अपना अनुभव दिल्ली सरकार के स्कूलों के साथ साझा करना चाहती हूँ। मैंने वास्तव में अपनी स्कूली शिक्षा एक प्राइवेट स्कूल से पूरी की है, इसलिए मुझे लगता है कि मैं आपको प्राइवेट स्कूली शिक्षा और सरकारी स्कूली शिक्षा के बीच स्पष्ट अंतर बताने के लिए एकदम सही हूँ। सच कहूँ तो मेरे समय में सरकारी स्कूल इतने अच्छे नहीं थे इसलिए मैंने प्राइवेट स्कूल से पढ़ाई की। लेकिन अब सरकारी स्कूलों की हालत पहले से काफी बेहतर है। दिल्ली के सरकारी स्कूलों के बुनियादी ढाँचे में बहुत सुधार हुआ है और वे वास्तव में प्राइवेट स्कूलों के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। स्कूलों में न केवल शैक्षिक कार्यों में बल्कि पाठ्येतर गतिविधियों पर भी

ध्यान केंद्रित किया जाता है जो बच्चे के समग्र विकास में मदद करता है। इस स्कूल में पढ़ाई अच्छी है। कुल मिलाकर मैं इन सभी सरकारी स्कूलों में किए गए सुधार से खुश हूँ।''

यह सब सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा। हमारी मैडम ने आगे आने वाले समय में इस सकारात्मक बदलाव को और बेहतर बनाने का वचन दिया। तभी आदरणीय पी.के. त्यागी सर ने इंदु सेतिया मैडम के बच्चों के प्रति स्नेह और अभिभावकों के प्रति सम्मान की सराहना की तथा अपनी ओर से भी आश्वासन दिया कि आगे आने वाले समय में स्थिति और बेहतर होगी और यह हम सबके आपसी सहयोग से ही सार्थक होगा। इसी के साथ सर ने सभी को कोरोना टीकाकरण अभियान के बारे में पूछते हुए जागरूक और प्रोत्साहित किया और कहा कि वे दिल्ली सरकार के स्कूलों में जाकर टीकाकरण अवश्य करवाएँ। अंत में सर ने सभी अभिभावकों को स्कूल आने के लिए धन्यवाद दिया और दूसरी क्लास की तरफ चल पड़े।

मैं फिर अपनी क्लास में बैठे अभिभावकों से बातें करने में मग्न हो गई। मुझे ऐसा लगा कि जैसे अपने घर के किसी सदस्य से अपने बच्चों के विषय में चर्चा कर रही हूँ। और ऐसा हो भी क्यों न? देश की उन्नति भी तो तभी है जब हम एक–दूसरे को अपना मान कर, उनके सुख–दुख में सहयोग कर आगे बढ़ने की प्रेरणा दें।

अंजलि

टी.जी.टी (प्राकृतिक विज्ञान)

राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय न. 2, गांधी नगर, दिल्ली

कहानी कामयाबी की

अगर आप ठान लेते हैं कि आपको कामयाब होना है तो कोई अड़चन आपको सफल होने से रोक नहीं सकती। ये सोच दिव्या, (बदला हुआ नाम) जो कि एक दिव्यांग छात्रा है, उसके लिए बिलकुल सही साबित होती है। दिव्या छठी क्लास में मेरे पास आई थी। शुरुआत में वह बच्ची किसी से बात नहीं करती थी, क्लास के सभी बच्चे उसका मज़ाक बनाते थे। इस कारण से दिव्या और उसके माता–पिता बहुत अधिक परेशान रहते थे। समय के साथ–साथ विशेष शिक्षिका के मार्गदर्शन से परिस्थितियाँ उसके अनुकूल होने लगी, कुछ समय बाद क्लास में उसके दोस्त बनने लगे, टीचर्स उसे समझने लगी कि किस प्रकार इसके साथ काम किया जाए।

दिव्या के साथ रिसोर्स प्लस करिकुलम पर काम शुरू किया गया। उसे स्कूल की को–करिकुलर एक्टिविटीज में भी शामिल करवाया गया। यह सब गतिविधि करवाने से उसका आत्म–विश्वास काफी बढ़ गया। दिव्या ने लगातार दो सालों तक स्कूल के वार्षिक महोत्सव में सोलो व ग्रुप डांस में परफॉर्म भी किया, जिसके लिए उसे पुरस्कार मिला। यही नहीं, बोलने में समस्या होते हुए भी उसने कविता पाठ में भाग लिया, ये वही दिव्या थी, जो कभी बोलती भी नहीं थी।

दसवीं के बाद दिव्या की काउंसलिंग की गई, और काउंसलिंग यह कि वह ITI में फैशन डिजाइनिंग के कोर्स में दाखिला ले और अपने माता–पिता के सपने को सच करे और यह साबित कर दे कि मनुष्य के अंदर किसी भी प्रकार की अक्षमता उसके लिए बाधा नहीं बन सकती। वह उससे लड़कर उसे हरा सकती है और इस समाज में अपना एक सकारात्मक योगदान दे सकती है।

मानसिक रूप से कमजोर होने के कारण दिव्या नौवीं क्लास पास नहीं कर पाई परंतु वह और उसके परिवार वाले चाहते थे कि किसी तरह दिव्या आत्म–निर्भर बन सके। इसके लिए उसे ओपन स्कूल ऑफ एजुकेशन का रास्ता दिखाया गया, ताकि वह 10वीं क्लास पास कर सके। दिव्या को फॉर्म फिल करने से लेकर सब्जेक्ट चॉइस करने में हर तरीके से मदद की गई। जब उसका एडमिशन हो गया तो पूरे साल किस तरह पढ़ाई करनी है, किन विषयों पर ज़्यादा फोकस करना है, इन सब चीजों को लेकर उसका मार्गदर्शन किया गया। दिव्या की मेहनत रंग लाई और उसने दसवीं कक्षा पास कर ली।

दसवीं के बाद दिव्या की काउंसलिंग की गई, और काउंसलिंग यह कि वह ITI में फैशन डिजाइनिंग के कोर्स में दाखिला ले और अपने माता–पिता के सपने को सच करे और यह साबित कर दे कि मनुष्य के अंदर किसी भी प्रकार की अक्षमता उसके लिए बाधा नहीं बन सकती। वह उससे लड़कर उसे हरा सकती है और इस समाज में अपना एक सकारात्मक योगदान दे सकती है।

मंजू बाला
पीजीटी, एसईटी
सर्वोदय कन्या विद्यालय विवेक विहार,
दिल्ली

अगर आप 'दिल्ली शिक्षा' पत्रिका की सदस्यता (सब्सक्रिप्शन) लेना चाहते हैं तो आप हमें मेल कर सकते हैं।

delhishiksha02@gmail.com

नृत्य के ज़रिये गणित

ये एक टीचर पर निर्भर करता है कि वह किसी विषय को रुचिकर कैसे बनाता है। मैं आज कोरोना काल के अपने कुछ अनुभव साझा करना चाहती हूँ कि मैंने अपने विषय गणित को बच्चों के लिए रोचक कैसे बनाया। मैं आप सबके साथ अपनी वे बातें भी साझा करना चाहती हूँ जो मैंने लॉकडाउन के दौरान अपनी छात्राओं से सीखीं।

ऑनलाइन क्लासेज के दौरान कब मैं बच्चों के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ती चली गई मुझे पता ही नहीं चला। मैंने उनके साथ एक नया प्रयोग करने के बारे में सोचा। मैंने बच्चों को अपने हिसाब से गणित का कोई भी एक 'टॉपिक' लेकर वीडियो बनाने को कहा।

जो नतीजे मेरे सामने आए उनको देखकर मैं दंग रह गई क्योंकि वे परिणाम मेरी आशा से भी कहीं ज़्यादा बड़े थे। जिन बच्चों की गणित में कोई रुचि नहीं थी, उन्होंने भी इतनी अच्छी वीडियो बनाई कि मैं हैरान रह गई। मुझे लगने लगा था कि मेरे इन बच्चों में बहुत प्रतिभा है। अब इस प्रतिभा को मैं किस तरीके से और निखारूँ और इसका उपयोग गणित के क्षेत्र में कैसे करूँ, मैं इस बारे में सोच–विचार करने लगी। काफी सोच–विचार के बाद मैंने गणित के टॉपिक "सममिति और ग्राफ" पर डांस का वीडियो बनवाने की योजना बनाई।

मैंने दसवीं क्लास की छात्राओं को इस काम के लिए चुना। इस काम में मुश्किलें तो बहुत आईं। लॉकडाउन के कारण सब कुछ बंद था। तब भी उन बच्चों ने सामान का जैसे–तैसे प्रबंध किया। किसी तरीके से वीडियो बनाकर और उसकी एडिटिंग करके मेरे पास भेजा। इस तरह से कई तरह के वीडियो मेरे पास आए। मुझे तो वे सभी वीडियो बहुत पसंद थे। बस अब यह देखना था कि मेरा यह नया प्रयोग अन्य शिक्षकों को कैसा लगता है। मैंने उनमें से एक वीडियो को चुना। मैंने उस वीडियो को अपने स्कूल के व्हाट्सएप ग्रुप पर डाल दिया। मैं गणित विषय के शिक्षकों के एक बहुत बड़े समूह की भी सदस्य हूँ। उस समूह में पूरे भारत के सैकड़ों गणित–शिक्षक जुड़े हुए हैं। मैंने वह वीडियो उस समूह पर भी डाल दिया। उस वीडियो के बारे में अन्य टीचर क्या प्रतिक्रिया देंगे, इस उत्सुकता के कारण

मेरा हृदय इतना तेज़ धड़कने लगा कि मैंने अपना फोन ही बंद कर दिया!

जब कुछ घंटों बाद मैंने अपना फोन दोबारा चालू किया तो उस वीडियो पर आई प्रतिक्रियाओं को देखकर मैं हैरान रह गई। मेरे स्कूल के ग्रुप पर भी और जो हमारा गणित का ग्रुप है, उस पर भी सब लोग बहुत खुश थे। यह प्रयोग सब लोगों के लिए एकदम नया था। सब हैरान थे कि क्या गणित में भी कुछ ऐसा हो सकता है।

इस वीडियो की सफलता के बाद मैंने डांडिया को लेकर एक अन्य प्रयोग किया। इस नृत्य द्वारा हमने समांतर रेखाएँ, शीर्षभिमुख कोण और पंचभुज आदि आकृतियों का योग बताया। ये सब मेरे बच्चों ने लॉकडाउन में ही किया। मैंने पहले एक कागज पर सारी योजना उन्हें समझाते हुए एक वीडियो भेजा कि उन्हें कैसे नृत्य करते हुए ये सारी आकृतियाँ बनानी है। बच्चे छत पर रोज अभ्यास करते थे। इसी बीच एक बच्ची की माँ की तबीयत भी बहुत खराब हो गयी थी। मैं और मेरे बच्चे सोशल मीडिया की तकनीकों के बारे में ज़्यादा नहीं जानते थे! पर हमने किसी कठिनाई से हार नहीं मानी। तमाम मुश्किलों के बावजूद आखिरकार हमें सफलता मिल ही गयी। 2 मिनट के इस वीडियो को बनाने में हमें 15 दिन लग गए!

यह वीडियो भी सबको बहुत अच्छा लगा! मुझे सुकून मिला, चलो हमारी मेहनत रंग लाई। उसके बाद मैंने इन सभी वीडियो को सेव करने और अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए एक यूट्यूब चैनल बनाया और सारे वीडियो को अपलोड कर दिया। मुझे इस बात पर गर्व है कि मेरे इस काम में मेरे विद्यार्थियों के साथ –साथ उनके माता–पिता ने भी पूरा सहयोग दिया। हमारा ये काम आज भी जारी है। इसी दौरान हमने दो नेशनल अवार्ड जीते। इन बच्चों की वजह से एक ऐसी टीचर जो सोशल मीडिया के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी, आज बहुत कुछ सीख गई है। ये सीखना आज भी जारी है।

हर्ष भल्ला
टी.जी.टी. (गणित)
राजकीय उच्चतर कन्या माध्यमिक विद्यालय, रूपनगर न.1, दिल्ली

"मनुष्य का कर्तव्य है कि वह प्रयास करे, सफलता मौके और वातावरण पर निर्भर करती है।" – भगत सिंह

शिक्षा संस्कृति में कलात्मकता की दरकार

कला क्या है? ऐसी कोई भी वस्तु जो दर्शक के मन में भाव उत्पन्न करे वह कला है। किसी भी कार्य को मौलिक और रचनात्मक ढंग से करना भी कला है। म्यूजियम और आर्ट गैलरियों में पहले मुख्यतः चित्रकला और शिल्पकला को ही स्थान प्राप्त था। लेकिन वर्तमान में कला का दायरा फैल गया है। कलात्मक ढंग से पेश की गई कोई भी वस्तु आपको आर्ट गैलरी में दिख सकती है, चाहे वह कोई मशीन का पुर्जा, रोज़मर्रा के उपयोग की कोई वस्तु ही क्यों न हो। "खाना बनाना एक कला है" जैसे शब्द प्रयोग इस बात का साक्ष्य है कि कला हर क्षेत्र में व्याप्त है। बस कला की अभिव्यक्ति का माध्यम अलग–अलग हो सकता है। जहाँ–जहाँ सृजन है, वहाँ कला है।

मेरा निजी अनुभव मुझे टेक्नोलॉजी और कला की विपरीत दुनियाओं के बेहद करीब ले गया। हमारी शिक्षा संस्कृति में टेक्नोलॉजी और कला विपरीत छोर पर मौजूद होते हैं। जबकि असल दुनिया में ये दोनों क्षेत्र एक दूसरे से इतने दूर नहीं हैं। संसार की कोई भी वस्तु टेक्नोलॉजी और कला के मिश्रण से ही बनी होती है। जहाँ आज कला के क्षेत्र में खासकर फिल्मों में टेक्नोलॉजी का भरपूर उपयोग होता है, वही टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में विशेषकर डिजाइन कला के बिना अधूरा है। कहने का अर्थ यह है कि हर कला के आधार में टेक्नोलॉजी यानी कोई स्किल होती है और बिना कलात्मकता के कोई भी टेक्नोलॉजी कारगर साबित नहीं हो सकती।

हमारे देश की सबसे बड़ी विडंबना है तेज़ी से बदलते इस युग में पुरातन शिक्षा प्रणाली का होना। हमारी शिक्षा तेज़ी से बदलते युग की ज़रूरतों के अनुसार बदलने में नाकाम रही है। परिणामस्वरूप हमारे छात्र अनावश्यक चीज़ों में अपनी ऊर्जा खपा रहे होते हैं जो उन्हें अपनी वास्तविकता से जूझने के काबिल नहीं बनाती। पारंपरिक शिक्षा पद्धति में पढ़ाए जाने वाले विषय ठोस खाँचों में विभाजित होते हैं जबकि उन्हें एक दूसरे में घुलने के काबिल होना चाहिए। असल जीवन में फिजिक्स, केमेस्ट्री, मैथ्स, खगोल, एस्ट्रोनोमी, जियोग्राफी, इकोनॉमिक्स, हिस्ट्री, लैंग्वेज, फिलोसोफी इत्यादि एक दूसरे

से अलग नहीं होते बल्कि एक दूसरे से परस्पर जुड़े होते हैं। हम अपनी समझ की आसानी के लिए इसे अलग–अलग विषयों में बाँटते हैं। इसीलिए माध्यमिक स्तर तक साइंस के छात्रों को भी स्कूल स्तर पर समाजशास्त्र पढ़ाया जाता है और सोशल साइंस पढ़ने वाले छात्रों को मैथ्स और साइंस पढ़ाया जाता है। वैसे ही शिक्षा में कला का सुनियोजित समावेश ज़रूरी है। कला, मानव जीवन और समाज को सौंदर्य और अर्थ प्रदान करती है। यह ज़रूरी है कि अलग–अलग विषय पढ़ने वाले सभी ज़रूरत है। साथ ही माइक्रो लेवल पर संवेदनशील ढंग से हर विषय में छात्रों की मौलिक अभिव्यक्ति पर ज़ोर दिए जाने की ज़रूरत है।

हमारी पारंपरिक शिक्षा मौलिक अभिव्यक्ति को बढ़ावा नहीं देती, ऐसे में छात्र स्किल्स भी सीखते हैं तो उसका अपने वास्तविक जीवन में सही से उपयोग नहीं कर पाते हैं। सिर्फ कोई स्किल सीख लेना ही पर्याप्त नहीं होता उसके साथ ये भी ज़रूरी होता है कि समाज में उसका उचित जगह पर उपयोग, उसका उद्देश्य भी मालूम हो।

हमारी पारंपरिक शिक्षा मौलिक अभिव्यक्ति को बढ़ावा नहीं देती, ऐसे में छात्र स्किल्स भी सीखते है तो उसका अपने वास्तविक जीवन में सही से उपयोग नहीं कर पाते है। सिर्फ कोई स्किल सीख लेना ही पर्याप्त नहीं होता, उसके साथ ये भी ज़रूरी होता है कि समाज में उसका उचित जगह पर उपयोग, उसका उद्देश्य भी मालूम हो।

छात्र एक कलात्मक दृष्टिकोण रखते हों। शिक्षा में कला का समावेश कोई नया पाठ्यक्रम जोड़ कर नहीं किया जा सकता। पारंपरिक कला शिक्षा में भी वे सारी खामियाँ हैं जो अन्य विषयों की शिक्षा में हैं। कला के समावेश के लिए पूरी शिक्षा संस्कृति में बदलाव की कोडिंग आने वाले समय के लिए एक बेहद ही आवश्यक स्किल है, परंतु प्रश्न यह है कि यह बच्चों तक किस स्वरूप में पहुँचाई जा रही है। हाल ही में एक एड–टेक कंपनी ने खूब विज्ञापन चलाए थे। उनमे दिखाया जाता था कि कैसे छठी क्लास के चिंटू ने एक ऐप बना

लिया है। यह सपना पेरेंट्स को बेचा जाता कि आप भी उनका प्रोडक्ट खरीद अपने बच्चे को चिंटू की तरह होनहार बनाए। इस प्रतियोगितात्मक दौर में असुरक्षा की भावना से भरे पेरेंट्स ऐसे एड–टेक प्रोडक्ट्स के सामने बेबस और लाचार हैं। वे नहीं चाहते कि उनका बच्चा किसी भी तरह से पीछे रह जाए। इसने पेरेंट्स और छात्रों के मन में कुछ विषय विशेष को आवश्यकता से अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। समस्या यह कि हमारी शिक्षा संस्कृति में अंधाधुंध केवल स्किल पर ज़ोर दिया जा रहा है। उन सभी एप्प के जरिये सभी चिंटू कोडिंग तो सीख जाएँगे लेकिन कोडिंग का उद्देश्य क्या होना चाहिए यह उन्हें कौन बताएगा।

कला की शिक्षा के दो महत्वपूर्ण आयाम है रचनात्मकता और विचारशीलता। कला सृजन के लिए संवेदनशीलता और नया नज़रिया होना आवश्यक है। अगर कला की शिक्षा की वैल्यूज को बाकी विषयों में जोड़ा जाए तो संभव है कि हम अधिक संवेदनशील और सौम्य छात्रों का निर्माण कर सकेंगे।

शिक्षा में कला के समावेश का यह अर्थ नहीं है कि छात्र पेंटिंग, थिएटर इत्यादि में कुशल हो जाएँ। शिक्षा में कला के समावेश का अर्थ है कि विषय चाहे कोई भी हो, छात्र उस माध्यम से सृजन और अभिव्यक्ति करना सीख जाएँ। कला में मौलिकता, संवेदनशीलता और रचनात्मकता की सीख शामिल है। ये सारी खूबियाँ सिर्फ कला ही नहीं पर अन्य क्षेत्र जैसे बिजनेस, विज्ञान, टेक्नोलॉजी, राजनीति इत्यादि को भी समृद्ध बनाती है। ये विशेषताएँ एक छात्र को नए युग में आगे बढ़ने के लिए सक्षम और परिपक्व बनाती हैं।

यतीश अग्रवाल

Twitter handles to follow

- Directorate of education : @Dir_Education
- Dilli Shiksha Magazine : @delhi_shiksha
- #LetsTalkEducation : @LetsTalkEdun
- Talents of Directorate of education : @TalentsOfDoE

Relevant Hashtags

- #DelhiGovtSchools
- #HappinessCurriculum
- #ProudDelhiGovTeacher
- #DelhiEduReforms

आसान नहीं, ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियाँ

कोरोना महामारी के इस कठिन दौर ने जिस तरह से प्रत्येक मनुष्य की जीवन–शैली को बुरी तरह से झकझोर कर रख दिया है उससे अछूते न तो विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी हैं और न ही उनको शिक्षा देने वाले शिक्षक। जब से महामारी आई है, तब से विद्यार्थियों के साथ–साथ शिक्षक वर्ग भी अपने आपको असहाय महसूस कर रहा है क्योंकि आमतौर पर यह देखा गया है कि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले अधिकतर बच्चे सामान्य से भी निचले वर्ग से ताल्लुक रखने वाले होते हैं, उनके पास वे संसाधन नहीं होते जिससे वे घर पर बैठकर अपने टीचर्स से ऑनलाइन माध्यम से जुड़कर फायदा उठा सकें। कोरोना के कारण स्कूल लंबे अंतराल के लिए बंद करने पड़े, जिसके कारण विद्यार्थियों और अभिभावकों के मन में एक अनदेखा–सा डर बैठने लगा कि अब आगे कि पढ़ाई का क्या होगा? ऐसे में दिल्ली सरकार की पहल पर शिक्षकों ने ऑनलाइन शिक्षा का मार्ग तलाशना आरंभ किया और बहुत जल्दी ही उनको इस कार्य में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई। उनकी इस गंभीर समस्या को दृष्टिगत रखते हुए

आज ऑनलाइन क्लोसेज़ हमारे और हमारे विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हो रही हैं। इस माध्यम ने हमें और हमारे विद्यार्थियों को घर में बैठे–बिठाए ज्ञान–विज्ञान का एक ऐसा माध्यम उपलब्ध कराया है जिससे हम लगातार अपने विद्यार्थियों से जुड़े रहकर उनकी प्रत्येक समस्या का निवारण कर पा रहे हैं।

सरकारी विद्यालयों के प्रमुख और शिक्षक यथासंभव प्रयास करके, अभिभावकों को प्रेरित करके, कम से कम प्रत्येक घर में पढ़ाई करने वाले सभी बच्चों के लिए संयुक्त रूप से एक स्मार्ट मोबाइल फोन या टैबलेट दिलाने की कोशिश में लगे रहे। बहुत हद तक इस प्रयास में उनको सफलता भी प्राप्त हुई। आज अगर बोर्ड क्लासेज़ की बात करें तो बोर्ड की परीक्षाओं की तैयारी कर रहे प्रत्येक विद्यार्थी के पास ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करने के लिए कोई न कोई ऑनलाइन माध्यम अवश्य उपलब्ध है।

महामारी से पहले तक ऑनलाइन क्लासेज़ को एक समस्या के रूप में देखा जाता था, वहीं आज ऑनलाइन कक्षाएँ हमारे और हमारे विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हो रही हैं। इस माध्यम ने हमें और हमारे विद्यार्थियों को घर में बैठे–बिठाए ज्ञान–विज्ञान का एक ऐसा माध्यम उपलब्ध कराया है जिससे हम लगातार अपने विद्यार्थियों से जुड़े रहकर उनकी प्रत्येक समस्या का निवारण कर पा रहे हैं।

कोरोना महामारी से पहले हमारे पठन–पाठन की शैली बिल्कुल अलग थी परंतु कोरोना काल के वर्तमान परिदृश्य में ऑनलाइन क्लासेज़ ने हमें हमारे विद्यार्थियों से लगातार जुड़े रहने का अवसर प्रदान किया है। ऑनलाइन के ज़रिये हम बच्चों की पढ़ाई के साथ–साथ उनकी सामाजिक खुशहाली से अवगत हो रहे हैं और उनकी किसी भी समस्या का समाधान सहज रूप से तत्काल कर पा रहे हैं।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि किसी भी सिक्के के दो पहलू अवश्य होते हैं। यह बात इन ऑनलाइन कक्षाओं पर भी लागू होती है। ऑनलाइन माध्यम से जहाँ हमको अनेक तरह की सुविधाएँ मिलती हैं तो कई तरह की समस्याओं का सामना भी करना पड़ता हैं जिसमें सर्वप्रमुख समस्या नेटवर्क की बनी रहती है। प्रत्येक विद्यार्थी तक समुचित नेटवर्क की उपलब्धता कम ही होती है। इस माध्यम के लिए एक अच्छे नेटवर्क की आवश्यकता होती है जो कि प्रत्येक विद्यार्थी के पास समान रूप से नहीं होती। ऐसा देखा गया है कि विद्यार्थी कुछ समय तक बड़े उत्साह से इस माध्यम में प्रतिभाग करते हैं परंतु लंबा अंतराल होने पर उनमें अरुचि होने लगती है। इसमें अपार संभावनाएँ छिपी हुई हैं परंतु गंभीरता से देखने पर यह माध्यम, स्कूल वातावरण में दी जाने वाली शिक्षा का विकल्प नहीं हो सकता। ऑनलाइन कक्षाओं ने इस कठिन समय में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों के मध्य एक सेतु का निर्माण किया है जिसके माध्यम से हम अपने अभिष्ट लक्ष्य की ओर निरंतर अग्रसर हैं।

डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र
(प्रवक्ता हिंदी)
सर्वोदय सह–शिक्षा विद्यालय
मस्जिद मोठ, साउथ एक्स–II, नई दिल्ली–110049

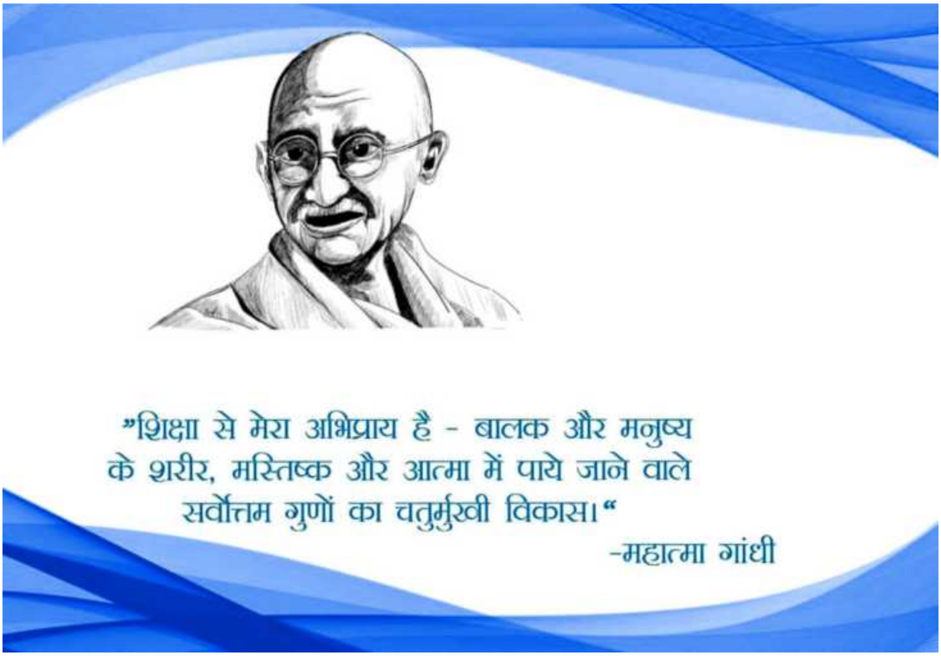

Giving Credit where it is Overdue! State Teachers Award-2021

'Change is hard at first, messy in the middle and gorgeous at the end.' *Robin Sharma*

I have just completed 4 years in the directorate of education as a teacher, hence not eligible for State Teachers Award , told a young teacher when asked for not applying for State Teachers Award a few years back although the efforts made by the teacher in school had been exemplary and deserved recognition. The other one said, हमारे यहाँ तो विद्यालय प्रमुख ही निर्धारित करते हैं कि कौन आवेदन करेगा? Such concerns were shared by many hard working teachers, guest teachers and contractual teacher stating their ineligibility for applying for the State Teacher Awards. Also the criteria for selection for the award were not very encouraging for teachers along with most of them feeling more motivated towards teaching learning. It was evident that the process for State Teachers Awards required significant change. Recognition for their hard work and dedication is critically important as it fosters continued engagement and validation.

There have been a number of reforms in Education in Delhi that grabbed everybody s attention. This was the right time to initiate change in the process of the State Teachers Award. The worthy Director of Education Sh. Udit Prakash Rai, IAS who leads by example listened to teachers voices.

He encouraged a team of MTs led by Sh. BP Pandey OSD (School branch) and Awards Branch to modify the application form for Teachers and HoS for the State Teachers Award-2021, and the change that happened was not only gorgeous but created history.

The State Award for Teachers 2021 witnessed the complete overhaul in the entire State Award process. Criteria for State Awards for Teachers -2021 were based purely on performance of teachers. The State Teacher Award applications were invited online and the whole process from application to evaluation of performance was made paperless. An eligibility criterion of minimum 15 years' service was brought down to 03 years of regular service. There was no cap on the number of teachers who could apply from a school.

Not only the mode of application but also the Application Form, Rubrics and Descriptors for evaluation were changed to make this process more qualitative and transparent. Performance of teachers and HoS was evaluated for the work done by them over a period of time rather than a point of time. More weightage of marks was given to the process than the outcome (result) covering domains i.e. academic, pedagogic and co-curricular facets of a teacher's role. Teachers were evaluated for efforts e.g. initiatives to improve learning outcomes, innovative Teaching Learning Practices undertaken, efforts made for their own professional capacity building, organization of extra and co-curricular activities, and use of social media for education. Teachers and HoS applying for the award were also expected to share their goal and vision for the school for next five years.

Roles and responsibilities, other than academics, performed by teachers during Covid-19 were recognized to encourage them to render service to the community. STA-2021 application form also included Initiatives taken in collaboration with Alumni and School Management Committee.

There was a huge response from the teachers and HoS who applied for the award this year. The application was teachers centric providing them the real opportunity to reflect their teaching learning practices in a real sense. Ms Neetu Chhabra TGT (English), who won the State Teacher Award 2021 expressed her joy, ***"The application form reflected a transition from the tried and tested conventional methods of teaching to new pedagogies of learning. It***

was augmented to recognise the use of innovative pedagogies in the classroom as well as the professional growth and development of the teacher."

Total 1582 Teachers, 204 HoS, 53 Librarians and 123 Guest Teachers/ Contractual Teachers from Govt/ Aided/Unaided schools of Delhi registered for the award in different categories. There was a significant leap over the number of applications in STA-2021 from the last three years. The total applicants finally applied for the award, as a result of online and unrestricted opportunities to apply were 1108 in the year 2021. In the last three years, this was just 234, 148, and 204 respectively.

Two new awards were introduced this year called, Face of DoE to recognize a teacher who demonstrated or enabled her/his students to demonstrate creativity in the field of Arts, Literature, Sports, etc and pursued or helped students pursue excellence. STA-2021 introduced five awards for the educationist from SCERT for their inspiring contribution to education in Delhi.

To make the evaluation process fair and transparent, Selection Committee was formed at District Level and Headquarters level bringing in the representation from SMC, to share the ownership of the State Teachers Awards with the community.

As we quoted in beginning ***"Change is hard at first, messy in the middle and gorgeous at the end."*** The exercise of overhauling State Teachers Award became messy in middle when the team had to toil 24*7 deliberating upon the process with different stakeholders i.e. Awards Branch and MIS team who were responsible to design and formulate the application form and rubrics online. It was exhausting, but a great learning experience. Scaffolding by the Director of Education himself to the team during the process was exceptional and congenial. Finally, the ceremonial function for The State Award for Teachers-2021 was incredibly gorgeous giving the team sense of accomplishment. The encouraging words by the Dy CM and Education Minister Sh. Manish Sisodia for this reform in State Teacher Awards-2021 re-energised all of us.

The reforms in State Teachers Awards-2021 enabled teachers and Heads of schools to not only highlight their leadership qualities but also illustrate the steps taken to collaborate within and outside school. It empowered them to self-reflect, share the challenges and strategies they employed to resolve those challenges towards Delhi Education Reforms.

Harish Yadav
Mentor Teacher, GBSSS, Amalwas, Jwalapuri
Rohit Upadhyaya
Mentor Teacher, CSA, GBSSS, New Friends Colony

FACE OF DOE

सुमन अरोड़ा
प्रवक्ता गणित

मेरी उड़ान...

संगीत के स्वरों से गूंजता त्यागराज स्टेडियम। स्टेट टीचर्स अवार्ड कार्यक्रम का आयोजन था। सभी अतिथि अपना स्थान लगभग ग्रहण कर चुके थे। धड़कते दिल को सम्भालते हुए मैंने सभागार में प्रवेश किया। प्रारम्भिक औपचारिकताओं के बाद अहसास हुआ कि आज हवाओं में कुछ अलग ही सरगर्मी है। Face Of DoE के रूप में चयनित होना अपने आप में किसी सम्मान से कम नहीं! अनायास ही इतने सालों की जीवन यात्रा आँखो के सामने तैरती सी चली आयी, जिसमें कड़ी मेहनत, कुछ कर दिखाने की चाह, हिम्मत और हौंसलों की उड़ान और अपनों का आशीर्वाद सब शामिल था!

"मंजिलें उन्हीं को मिलती हैं जिनके सपनों में जान होती है,
पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।"

आज उन्हीं हौसलों की कहानी लेकर मैं सुमन अरोड़ा (व्याख्याता, गणित) इस पत्रिका के माध्यम से अपनी यात्रा आप सबके साथ साझा करना चाहती हूँ।

मैं अपने माता पिता की चौथी संतान, एक लड़की थी। मेरे जन्म पर माँ को बधाई देने के बजाय सभी रिश्तेदार ताना देने चले आये! मेरी माँ मेरे लिए सबसे बड़ी प्रेरणा रही और उन्होंने मेरे पिताजी को भी समझाया की एक दिन हमारी यही बेटी बड़ी होकर हमारे परिवार का नाम रोशन करेगी। मेरी माँ एक प्राथमिक विद्यालय में अध्यापिका थीं, जिनके जीवन का सिद्धांत था, "कर्म ही पूजा है" और वही संस्कार उन्होंने अपनी चारों बेटियों में डाला। मैं जब भी अपनी माँ के विद्यालय में जाती थी, तो उन्हें वहां पर बड़ी लगन के साथ विद्यार्थियों को पढ़ाते पाती थी। वहीं मेरे कोमल मन में एक प्रभावशाली शिक्षिका बनने का अंकुर पनपा।

मैंने बारहवीं कक्षा 75% अंकों से उत्तीर्ण की और मित्रों को देखकर मैंने भी इंजीनियरिंग और मेडिकल के लिए आवेदन किया लेकिन किसी अच्छे प्रतिष्ठित कॉलेज में प्रवेश नहीं मिला। मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय से गणित ऑनर्स से स्नातक (B.Sc.) की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की और M.Sc. गणित के लिए आई.आई.टी. दिल्ली की प्रवेश परीक्षा की तैयारी में

जुट गई। उस परीक्षा में मैंने 16 वां स्थान प्राप्त किया। मेरी खुशी का पारावार नहीं था। अपने पिताजी की आंखों में पहली बार बेटी के लिए खुशी के आँसू देखे।

मैंने 1999 में IIT दिल्ली से M.Sc. गणित 77.8% अंकों से उत्तीर्ण की। फिर मैंने NET और GATE गणित विशय से उत्तीर्ण किया। GATE में मैं सम्पूर्ण भारत में 28 वें स्थान पर रही। एमिटी से B.Ed. करने के उपरांत एमिटी इंजीनियरिंग कॉलेज में ही व्याख्याता की नौकरी मिल गई और इस प्रकार से मैंने शिक्षा के क्षेत्र में पहला कदम रखा! दिल्ली सरकार द्वारा आयोजित TGT गणित की परीक्षा 2005 में उत्तीर्ण की, तो खेल खेल में गणित को पढ़ाने का सपना संजोए एक गणित की शिक्षिका बनने का सपना साकार हो उठा हो जैसे।

''मन के हारे हार है मन के जीते जीत'' के सिद्धांत पर चलते हुये मैंने 2010 में दिल्ली शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित PGT गणित की परीक्षा, महिला सामान्य वर्ग में प्रथम स्थान से उत्तीर्ण की। अब तो मेरे सपनों को पंख मिल चुके थे। ईश्वर ने मेरी उन्नति के लिए एक बहुत बड़ा द्वार खोल दिया था। मैं हमेशा अपने विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हूँ और कहती हूँ कि उन्हें अपने सपनों को जीवंत रखना होगा, उसके लिए इतना परिश्रम करें कि पूरा संसार उन्हें उनके उद्देश्य से मिलाने में लग जाए।

किसी विद्वान का कथन है कि ''शिक्षक एक मोमबत्ती के समान है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाशित करता है'' और उसी प्रकाश को जीवित रखने के लिये मैं स्वयं भी नियमित अध्ययन करती हूँ, तभी मैं अपने कर्तव्य के साथ न्याय कर पाती हूँ।

इन्ही दिनों दिल्ली में शिक्षा को लेकर होने वाले नवाचार प्रयोग मैंने जल्दी ही आत्मसात् कर लिए और स्वयं भी अपनी कक्षा मे ऑनलाइन टीचिंग के कई प्रयोग किए। कोर एकेडमिक यूनिट (CAU) से श्री विद्यासागर मलिक जी ने मुझे कोरोना काल के दौरान ऑनलाइन टीचिंग के लिए आमंत्रित किया, जिसे मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। मेरे विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती प्रीति सक्सेना की मैं आभारी हूँ, जिन की प्रेरणा से मैं अपनी क्षमताओं का भरपूर दोहन कर पायी। अब तक जो सीखा था, उसे समाज को वापिस देने का उपयुक्त समय था और चुनौती भी।

Face Of DoE पुरस्कार के लिए स्वयं को नॉमिनेट करने का विचार आकस्मक था। पहली बार किसी ऐसी शख़्सियत का चुनाव जो दिल्ली के teachers को रेप्रेजेंट कर सके, यह एक चुनौती से भरा निर्णय था। मुझे मिलना एक रोमांचक अनुभव है। राज्य पुरस्कार मेरे लिए सम्मान का परिचायक होने साथ एक जिम्मेदारी का अहसास भी है। भविष्य में भी विश्व स्तर पर दिल्ली शिक्षा का परचम फहराऊँ, अब यही आकांक्षा है।

सुमन अरोड़ा
प्रवक्ता गणित
राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय ए6
पश्चिम विहार, दिल्ली

FACE OF DOE

दिल्ली के शिक्षा जगत में मेरी यात्रा

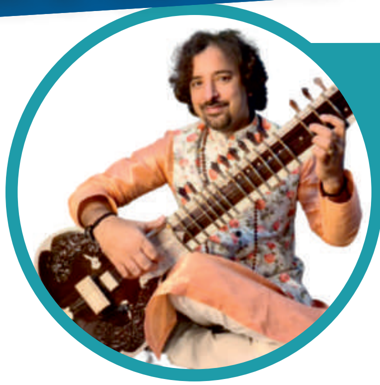

राजकुमार
म्यूजिक टीचर

25 अप्रैल 2008 में संगीत अध्यापक के रूप में मेरा शिक्षा निदेशालय दिल्ली सरकार में चयन हुआ। उससे पहले दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत विभाग से वर्ष 2000 में M.Phil की परीक्षा उतीर्ण कर मैं प्राइवेट स्कूल में अध्यापन कार्य करता रहा। 25 अप्रैल 2008 को मैं संगीत अध्यापक के रूप में चयनित हुआ, फलस्वरूप मुझे शिक्षा निदेशालय में जिला दक्षिण– पश्चिम ब के राजकीय उच्च सह शिक्षा विद्यालय सेक्टर 2 के स्कूल में कार्य करने का मौका मिला। मेरे संगीत के भूतकाल के सफल दौर को देखते हुए मुझे जोन 21 का सांस्कृतिक सचिव बना दिया गया, परिणामस्वरूप मुझे जिला दक्षिण पश्चिम के सभी सरकारी और प्राइवेट स्कूलों के सांस्कृतिक स्तर को निखारने का मौका मिला। 2017 तक का ये सफर कुछ ऐसा रंग लाया कि मेरा डिस्ट्रिक्ट पूरी दिल्ली के सभी डिस्ट्रिक्ट में लगातार 9 साल प्रथम स्थान पर रहा। मेरी इसी उपलब्धि को देखते हुए साल 2017 में मुझे दिल्ली स्टेट (हेड आफिस छत्रसाल मॉडल टाउन) में कल्चरल सेल का सदस्य बनाया गया। श्रीमती हरजीत कौर (PE & NI) के दिशा निर्देशन में मुझे नई–नई ज़िम्मेदारियाँ दी गई और कला उत्सव दिल्ली स्तरीय टीम का सचिव बनाया गया। 2017 में राज्य स्तरीय कला उत्सव प्रतियोगिता में दिल्ली राज्य 7 में से 7 प्रतियोगिताओं में अपना परचम लहरा पाया। इसी दौरान दिल्ली सरकार की नवीन पहल 'मैत्री यात्रा' पर मुझे जम्मू कश्मीर से आने वाले 800 विद्यार्थियों को कल्चरल एक्सचेंज कार्यक्रम के अंतर्गत संयोजक बनाया गया। 32 दिन तक चले इस कार्यक्रम के अंतर्गत जम्मू और कश्मीर से आने वाले विद्यार्थियों को दिल्ली दर्शन के साथ साथ दिल्ली के सरकारी

स्कूल के बच्चों के साथ खान–पान और शिक्षा से जुडे पहलुओं पर अपने कल्चर को साझा करने का मौका मिला। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए माननीय शिक्षा मंत्री श्री मनीष सिसोदिया ने मुझे शुभकामनाएँ और अपना आशीष दिया। दिल्ली के शिक्षा जगत में पिछले कुछ सालों में हुए चमत्कारी परिवर्तन से दिल्ली पूरे विश्व के लिए शिक्षा की उत्कृष्ट मिसाल बना है। ऐसे में दिल्ली शिक्षा निदेशालय का हिस्सा होना किसी के लिए भी गौरवपूर्ण पल हो सकता है। शिक्षा के तमाम सकारात्मक रवैये के साथ और कला को नवीन रूप देने की पहल से ही, मैंने गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के लिए 32 घण्टे 20 मिनट तक लगातार सितार बजाकर नवीन विश्व कीर्तिमान के लिए अपनी दावेदारी पेश की। कीर्तिमान के पलों पर शिक्षा मंत्री जी और तमाम शिक्षा अधिकारियों से मिला प्रोत्साहन मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

12 साल के इस शानदार सफर के लिए मुझे दिल्ली सरकार द्वारा 'फ़ेस ऑफ डीओई' के पुरस्कार से नवाजा गया।

स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सीलेंस दिल्ली सरकार का अब तक का सबसे नवीन प्रयोग है, जिसमें विद्यर्थियों को विश्व स्तर की शिक्षा प्रणाली से जोड़ने की पहल की गई है। International Baccalaureate से दिल्ली के स्कूलों को जोड़ा गया, ऐसे में सेक्टर 19 SoSE द्वारका में संगीत अध्यापक के रूप में मेरे सामने नवीन ज़िम्मेदारियाँ हैं। मेरा ये पहला बैच पूरी दुनिया का फेस बने ये मेरा अगला लक्ष्य है। मैं अपने माता पिता, गुरुओं और शिक्षा जगत के सभी अधिकारियों को साधुवाद देता हूँ। मैं आप सब की आशाओं के अनुरूप काम करता रहूँ और अपनी ज़िम्मेदारियों का निर्वाह करता रहूँ, ऐसा आशीष दें।

जय सरस, जय संगीत

राजकुमार
(संगीत अध्यापक) एसओएसई,
सेक्टर–19, द्वारका, दिल्ली

हमारे शिक्षक साथी इस पत्रिका के लिए अपने लेख हमें मेल कर सकते हैं।

delhishiksha.articles@gmail.com

SPECIAL AWARDS

Bharti Kalra,
Vice Principal,
Sarvodaya Co-ed Vidyalaya
Sec-8 Rohini, Delhi

She has been instrumental in mobilizing help for the students whose parents could not afford smartphones to their wards for taking online classes affected by covid-19 pandemic. Her efforts got smartphones to 321 students majority of those were the students of class 10 and 12. Her help has been central to the performance of the students in the Board Examinations 2021.

Sarita Rani Bhardwaj,
Lecturer Political Science,
Sarvodaya Co-ed Sr. Sec. School
Mangolpuri, Delhi

She has made innumerable efforts in reaching out to the students who could not be contacted on phone for online classes during COVID-19 pandemic. She took help from the community helpers to find students of her 6th class while she was a TGT in Paschim Vihar school. She has also provided worksheets to the students who did not have smartphones for online classes.

बेहतर शिक्षा ही राष्ट्र निर्माण

उदित प्रकाश राय की ओर से शिक्षा निदेशालय के लिए प्रकाशित
और राहुल वर्मा द्वारा बी.एम. ऑफसेट प्रिंटर्स,
डी-247/17, सेक्टर 63, नोएडा, उत्तर प्रदेश, पर मुद्रित
और शब्दार्थ, सूचना एवं प्रचार निदेशालय दिल्ली सरकार,
पुराना सचिवालय, दिल्ली से प्रकाशित
संपादक: आलोक रंजन
RNI Reg No. 23771/71